श्री गणेश वन्दना

(तर्ज : ममता की शीतल छाया...)

सीखें हर इक अंग से तेरे ऐसी सोच हमारी हो,
बुद्धि और विवेक के दाता गणपत तुम बलकारी हो,
कितने भेद छुपे हैं तुझमें हम मूरख ये क्या जाने,
ज्ञान का तु भण्डार है देवा जय जय कार तुम्हारी हो ।।

बड़े कान सिखलाते हमको, कान के पक्के बने रहे,
व्यर्थ बेतुकी बात सुने ना, हरदम उनसे दूर रहे,
जैसे सूंड तुम्हारी वैसी ऊँची शान हमारी हो ।। १ ।।

लम्बे उदर से लम्बोदर बात पचाना हम जाने,
चूहे जैसे तुच्छ जीव को बड़े काम का हम माने,
छोटी आँख हमें सिखलाती पैनी नजर हमारी हो ।। २ ।।

जिम्मेदारी हँस कर लेवें हाथी सा मष्तक होवे,
खाता बही में लिखना सीखें भूल चूक जो ना होवे,
काम की बातें लिख लेवें ये आदत सदा हमारी हो ।। ३ ।।

एक दान्त ने हमें सिखाया वक्त पड़े ना घबराये,
भय दिखलायें चाहे जितना पर हानी ना पहुँचायें,
''हर्ष'' नमन चरणों में तेरे किरपा नजर तुम्हारी हो ।। ४ ।।

श्री शिव वन्दना

(औंकारा)

डम डम डमरू बजैया रे, नाग गले लिपटैया रे, ओंकारा,
हाथों में त्रिशुल है जिनके शीश पे गंगा की धारा,
अंग भभूत लगाके बैठा दुनिया का पालन हारा ।।

दरवाजे पर नन्दी बाबा, जिनके पहरा देते है,
जल के इक लोटे से भोला, पल में खुश हो जाते हैं,
आक धतूरा-३ भोग लगाये वेष जोगिया है प्यारा ।।

ओढ़न को बाघम्बर तन पे, बैठन को मृगछाला है,
नारायण के ध्यान में खोये, नाग गले मतवाला है,
बड़े जोर से-३ बोलो भैया, शिवशंकर का जैकारा ।।

कही पहाड़ो पर बैठा है, कहीं पे है मैदानों में,
''हर्ष'' लगाये धूनी बैठा, कहीं कहीं शमशानों में,
सब देवों में-३ देव निराला, जग का ये सिरजन हारा ।।

(तर्ज : अगर तू ना होता हमारा क्या होता)

बड़ा ही दयालु बड़ा भोला भाला,
जटाओं में गंगा, गले नाग काला ।। टेर ।।

अंग विभुती लगाये हुए है, नंदी को दर पे बिठाये हुए है,
बड़ा ही अनोखा, बड़ा ही निराला,
जरा वेष देखो, धरा जोगी वाला ।। १ ।।

बैठे हुए है धूनी रमाये, राम प्रभु के ध्यान में खोये,
तन पे बाघम्बर सोहे है इनके,
बैठन को देखो, पड़ी मृग छाला ।। २ ।।

दूध से दुनिया स्नान कराये, आक धतूरे का भोग लगाये,
देवों की रक्षा, करने के खातिर,
पीना पड़ा था, इन्हें विष का प्याला ।। ३ ।।

क्या-२ बताऊँ, क्या-२ सुनाऊँ, श्रद्धा से चरणों में सर को झुकाऊँ,
अगर प्रेम से ''हर्ष'', जल जिसने डाला,
मुसीबत से उसको, पल में निकाला ।। ४ ।।

(तर्ज : बाँके बिहारी कजरारे तेरे...)

दोहा :ऊँचे ऊँचे शिखरों पे तू, भोले बाबा मंदिरों में तू ।
गंगा के किनारे पे तू, जग के नजारे में तू ।।

भोले भण्डारी त्रिपुरारी तेरी महिमा है अपार,
हो जैकार तुम्हारी बम-बम-बम ।।

मैं बनके काँवड़ियाँ बम बम बम, ले जल की गगरिया बम बम बम,
भोले की नगरिया बम बम बम, मैं तो आया रे त्रिपुरारी लेके काँवड़ तेरे धाम,
हो जैकार तुम्हारी बम बम बम ।।
तेरी जटा में गंगा बम बम बम, तेरा वेष है नंगा बम बम बम,
हो मस्त मलंगा बम बम बम, मैं तो आया रे त्रिपुरारी लेके काँवड़ तेरे धाम,
हो जैकार तुम्हारी बम बम बम ।।
तेरा ढंग निराला बम बम बम, तूने विष का प्याला बम बम बम,
गट गट कर डाला बम बम बम, मैं तो आया रे त्रिपुरारी लेके काँवड़ तेरे धाम,
हो जैकार तुम्हारी बम बम बम ।।
ये ''हर्ष'' नजारा बम बम बम, बरसे जल धारा बम बम बम,
ले नाम तुम्हारा बम बम बम, मैं तो आया रे त्रिपुरारी लेके काँवड़ तेरे धाम,
हो जैकार तुम्हारी बम बम बम ।।

श्री दादीजी वन्दना

(तर्ज : तेरे बिना श्याम हमारा...)

आंगणिये में आज पधार्‌या म्हारा दादी जी,
पधार्‌या म्हारा दादी जी, पधार्‌या म्हारा दादी जी ।।

गहरी-गहरी मेहन्दी हाथां रची है,
सिर पे सुरंगी चुनड़ी सजी है,
आँखड़ल्या में सुरमो घलाया म्हारा दादी जी ।।

सज सोलह सिणगार भवानी,
निरख रही भगतां के कानी,
टाबरियां के मन में समाया म्हारा दादी जी ।।

सोणा सोणा गजरा माँ ने पिहराओ,
दादी जी के चरणा में धोक लगाओ,
आके म्हारा लाड लडाया म्हारा दादी जी ।।

''हर्ष'' भगत दादी थारा गुण गावे,
चरणा में थारे लुल लुल जावे,
चोखो म्हारो मान बढ़ाया म्हारा दादी जी ।।

श्री शक्ति वन्दना

(तर्ज : आज म्हारे आंगणिये में ...)

आज म्हारे आंगणिये में आई म्हारी मावड़ी,
आई म्हारी मावड़ी पधारी म्हारी मावड़ी ।। टेर ।।

पीडे उपर मैया बैठी, रूप सलूणो लागे जी,
पूनम रो चन्दा भी दादी, फीको थारे आगे जी,
गल फूलां को, हार सुहाणों-२, पैरां पायल,ऽऽऽऽ
पैरां पायल छनक रही है, धुन गूँजे झनकार की,
आज म्हारे .... ।। १ ।।

लाल चूनड़ी थारे सोवे, शीश बोरलो साजे जी,
नथली मांही हीरा दमके, चूड़ो खन खन बाजे जी,
टाबरिया माँ, चँवर डुलावे-२, झूमे गावे,ऽऽऽऽ
झूमे गावे खुशी मनावे, नाचे नौ नौ ताल जी,
आज म्हारे .... ।। २ ।।

चौखा भाग जगाया म्हारा, दादी जी घर आई जी,
सिंहासण पर आन विराजी, जगदम्बा महामाई जी,
''हर्ष'' दिवानो, चरणां मांही-२, धोक लगावे,ऽऽऽऽ
धोक लगावे, शीश झुकावे, थारे बारम्बार जी,
आज म्हारे .... ।। ३ ।।

(तर्ज : कन्हैया ले चल परली पार)

आसरो दादी थारो है-२,
थारे भरोसे बैठ्यो मैया कोई न म्हारो है ।। टेर ।।

नैया मेरी भटक गई है,
थोड़ी थोड़ी चटक गई है,
मझधारा में अटक गई है,
दारमदार भवानी इबतो थां पर सारो है ।। १ ।।

हाथ पकड़ले डूब न जाऊँ,
रो रो थाने आज बुलाऊँ,
मेरे मन की पीड़ सुणाऊँ,
थे ना सुणो तो डूब ही जास्युँ और न चारो है ।। २ ।।

''हर्ष'' भवानी लाज बचाले,
चरणां मांही आज बिठाले,
टाबरिये ने गले लगाले,
जग सेठाणी हाथ थामले तेरो सहारो है ।। ३ ।।

(तर्ज : कब तक चुप बैठे...)

ऐ दादी तेरी किरपा की बरसात हो,
इस बेटे के सिरपे माँ तेरा हाथ हो,
हम दोनों का माँ जनम-जनम का साथ हो ।। टेर ।।

नित साँझ सवेरे मैं तो, माँ गीत तेरे ही गाऊँ,
तेरे चरणों की धूली, माथे पे तिलक लगाऊँ,
जीवन में मेरे खुशियों की प्रभात हो ।। १ ।।

मैं लाल बनूगां तेरा, तू मेरा लाड लडाना,
माँ जान के मुझको बेटा, ममता तू खूब लुटाना,
इस बेटे की झोली में ये सौगात हो ।। २ ।।

तूफानों से क्या डरना, जो साथ रहे माँ तेरा,
अंधियारी रातों में भी, जीवन में रहे सवेरा,
मैं ''हर्ष'' तुझे माँ ध्याऊँ दिन हो या रात हो ।। ३ ।।

(तर्ज : ओ बाबुल प्यारे...)

ओ ढांढण वाली SSS, तुझे निशदिन ध्याऊँ दादी
तेरी महिमा गाऊँ दादी, तेरी किरपा चाहुँ दादी, ओSSS ।।

तेरी दया से चलता गुजारा, तेरा दिया ही मैं खाऊँ,
तेरे ही दम पे माँ टीडा गेला, मैं अपना जीवन चलाऊँ,
तुही सुनती मेरी बात, तुही रखती मेरी लाज,
तेरी किरपा कभी ना हो कम, ओSSS... ।। १ ।।

तेरे भरोसे मेरा भवानी, चलता है दाना पानी,
तेरी ही सेवा में अब बीते, बेटे की ये जिन्दगानी,
पाऊँ हर पल तेरा साथ, रखना मेरे सिर पे हाथ,
थोड़ा बच्चे पे करना रहम, ओSSS... ।। २ ।।

''हर्ष'' दिवाना अरज गुजारे, मुझको भी ढांढण बुलाले,
आँचल की छाया दे दे भवानी, चरणों में अपने बिठाले,
तेरे बेटे का कहना, तेरी सेवा में रहना,
तेरी चौखट पे निकले ये दम, ओSSS... ।। ३ ।।

(तर्ज : लीला रंगीला नाचे रे...)

छम छम घुंघरू बाजे रे देखोSSS,
जंगल का राजा नाचे रे ।। टेर ।।

उछल उछल कर नाच दिखाये,
दादी जी का मनवा रिझाये,
साज सुरीले बाजे रे ।। १ ।।

खन-खन खन घुंघरू खनखाये,
होले होले माँ मुस्काये,
भगतों को प्यारा लागे रे ।। २ ।।

ममता मयी मेरी दादी निहारे,
''हर्ष'' भगत सारे नजरें उतारे,
पैरों की टाप बाजे रे ।। ३ ।।

(तर्ज : जरा देखले सजनवा...)

जरा ओढ़ले भवानी, चुनड़ी भगत ल्यायो ओढ़ले ।। टेर ।।

चान्द सितारा चमके दादी चून्दड़ली के माही,
घणे चाव सुं ल्यायो थाने भाई के ना भाई ।।

ओढ़ भवानी पीडे बैठो मेरो मान बढ़ादयो,
जन्म जन्म की टाबरिये की इबतो आस पुराद्यो ।।

मैं तेरो सेवकियो मैया तु जग की महाराणी,
टाबरिये की लाज राखले हे मोटी सेठाणी ।।

''हर्ष'' कहवे सै क्यूं है तेरो तन्ने कांई उढ़ाऊँ,
मेर मन का भाव भवानी थाने आज दिखाऊँ ।।

(तर्ज : राधे मेरी बंशी कहाँ...)

जोड़्या थारे द्वारे खड़यो हाथ रे,
टाबरिये ने निरखो घड़ी स्यात रे ।। टेर ।।

एक भरोसो थारो दादी थारी किरपा चाहुँ,
थारो शरणो लीन्हो मैया और कठे मैं जाऊँ,
थारे सिवा कोई ना सुणे बात रे ।।

थारो ही टाबर हूँ चाहे राखो या बिसराओ,
बालकियां की भूल चूक ने मतना चित लगाओ,
मैं तो चाहुँ दादी तेरो साथ रे ।।

''हर्ष'' पड़यो है चरणा मांही सिर पे हाथ फिराद्यो,
ममता की दो बून्द भवानी मेरे पे बरसाद्यो,
फेरूं थारी माला मैं दिन रात रे ।।

(तर्ज : धमाल)

झोली-माण्डले दादी के आगे मतना भटके रे,
काम तेरो माँ की किरपा सुं कदे ना अटके रे ।। टेर ।।

देती देती नाहीं थके जी मांगणियों थक जावे रे,
दोबारा दुनिया ना देवे इकबर नट के रे ।।

हुण्डी पुरजा ना मांगे जी माँगे ना गारन्टी रे,
देणें को अन्दाज है माँ को सब सुं हटके रे ।।

जी न भी माँ दे देव जी पाछो कोन्या मांगे रे,
दर पे साहुकार सेठ सब माथो पटके रे ।।

''हर्ष'' दयालु है दादी जी साँची है सकलाई रे,
चरण पकड़ले दादी जी का तु भी डट के रे ।।

(तर्ज : फूलों का तारों का...)

टीडा और गेला का बस क्या कहना है,
साथ विराजे ये दोनों बहना है,
सारी उमर माँ के गीत गाना है ।। टेर ।।

देखो सारी दुनिया में दादी जी का नाम,
मेरी सती दादी का पावन ढ़ाण्ढ़ण धाम,
चरणों की सेवा में मुझको रहना है ।। १ ।।

मैं तो युँही चाहुँगा दादी तेरा साथ,
युँही थामे रखना तु मैया मेरा हाथ,
ममता की छाया में मुझको रहना है ।। २ ।।

मैं हूँ मेरी दादी की बगिया का फूल,
दिल से तु भुलाना माँ हो जाये जो भूल,
''हर्ष'' तुम्हारा माँ बनके रहना है ।। ३ ।।

श्री दादीजी वन्दना

(तर्ज : आयो फागण मेलो...)

तू दूर्गा तू काली, मैया झुंझनुवाली,
इ कलयुग के माही, तेरी शान निराली ।। टेर ।।

डंको बाजे घर-घर माही सारी दुनिया ध्यावे,
देश दिशावर सुं नर नारी दरशन तांई आवे,
आयो जो भी सवाली, भरदी झोली खाली ।।

दादी जी का दुनिया माही चरचा होवे भारी,
टाबरियां पे भीड़ पड़े तो परचा देवे भारी,
भगतां की प्रतिपाली, देवे मां खुशहाली ।।

तेरे ही भरोसे दादी मैं तो मौज उड़ाऊँ,
''हर्ष'' भवानी अईयां ही मैं तेरी किरपा चाहूँ,
राखिजे रखवाली, रोज मनाऊँ दिवाली ।।

श्री शक्ति वन्दना

(तर्ज : श्याम तेरे भरोसे...)

दारका नदी किनारे मैया का धाम है,
जय हो तारा भवानी गूँजे यही नाम है ।। टेर ।।

बामा खैपा सा मैया तेरा ना भक्त दूजा,
तुझसे पहले माँ तारा होती है उसकी पूजा,
तेरे मंदिर के पीछे घना शमशान है ।।

लाखों लाखों श्रृद्धालु द्वार पे तेरे आते,
वार शनिवार-मंगल दर पे माँ शीश नवाते,
हर जुबां पे माँ तारा तेरा गुणगान है ।।

हर अमावश्या के दिन पूजा तेरी खास होती,
तेरे भगतों की दर पे पूरी हर आस होती,
तेरे इस ''हर्ष'' का माँ तुझको प्रणाम है ।।

(तर्ज : प्रेम से भावो से...)

प्रेम से देखो माँ निगाहें मोड़ ना लेना,
बड़ी उम्मीदें लेके आया हुँ दिल तोड़ ना देना ।।

निगाहें फेर ली जग ने तेरे दरबार आया हुँ,
तेरी चौखट पर ही दादी हमेशा प्यार पाया हुँ,
भगत से बेटे का रिश्ता, भवानी जोड़ तु लेना ।।

नहीं जो दे सके कोई वही तो माता देती है,
हमेशा लाल की अपने सभी पीड़ा हर लेती है,
पराया जान के मुझको, अकेला छोड़ ना देना ।।

मैं प्यासा हुए जमाने से मुझे भी प्यार देदे माँ,
पड़ा हुँ चौखट पे तेरी मुझे चरणों में ले ले माँ,
थाम इस ''हर्ष'' की मैया, ये जीवन डोर तु ले ना ।।

(तर्ज : होलिया में उड़े रे गुलाल...)

भगतां रंगाई थारी लाल चुनरिया दादी जी,
मिलके सजाई ओढ़ो आज चुनरिया दादी जी ।।

सोणो सो इक पोत मंगाया,
पाछे सब भगतां ने बुलाया,
साँचो लगायो देखो माल ।। १ ।।

कोई गोटा तारा लगाया,
कोई सोणा फूल बणाया,
इने सजाया थारा लाल ।। २ ।।

भाव भरी या चुनड़ी म्हारी,
ओढ़ के बैठो थे महतारी,
करद्यो माँ म्हाने थे निहाल ।। ३ ।।

एक अकेले ने मत तांको,
सारे भगतां कानी झांको,
कोई के रह्वे ना मलाल ।। ४ ।।

सैंके हाथां सुं सजी चुनरिया,
ओढ़ के आसण बैठी मैया,
रूतबो है ''हर्ष'' कमाल ।। ५ ।।

(तर्ज : सजदा-सजदा-सजदा...)

भरदे-भरदे-भरदे, माता मेरी झोली भरदे,
झोली भरदे, दया करदे, दया करदे माँ भरदे ।।

दुखड़ों का मारा हुआ, आया तेरे द्वारे, ''कर मुझपे महर शेरांवालिये''-२,
कितनों को तारा तूने, मुझको भी तारो,
''आके दुखड़ो से मुझको निकालिये''-२,
खड़ा कबसे, तेरे दर पे, तेरे दरपे माँ भरदे ।।

ऐसे ना बिसारो, मुझे, गले से लगालो, ''मैं तो दुखड़ों से बड़ा बेहाल हुँ'–२,
जानो ना पराया मुझे, पलके उठाओ जरा,
''जननी तुम्हारा ही तो लाल हुँ'–२,
करूं सजदे, तेरे दरपे, तेरे दर पे माँ भरदे ।।

तूने ही बिसारा गर, मुझको बतादे माँ ''हर्ष'' तुम्हारा कहां जायेगा''-२,
तुझसे बिछड़ के माँ, दूजा ना ठिकाना कोई,
''जग में अकेला रह जायेगा''-२,
हाथ धर दे, मेरे सिर पे, मेरे सिर पे माँ धर दे ।।

(तर्ज : मुरली वाले छोड़ मेरा...)

भरनो पड़सी मैया मेरो गल्लो,
छोड़स्युँ ना दादी तेरो पल्लो ।। टेर ।।

हाथां सै दोन्यु दुनिया ने बाँटो,
बेटे ने दादी कैंया थे नाटो,
झोली माण्डे बैठ्यो तेरो लल्लो ।। १ ।।

मौज उड़ावे माँ सारो जमानो,
मेरे भी तांई खोलो खजानो,
बैठ्यो हूँ दादी निठल्लो ।। २ ।।

लेणे की आई मेरी भी बारी,
देणे की मैया करल्यो थे त्यारी,
आयो है ''हर्ष'' इकल्लो ।। ३ ।।

(तर्ज : म्हारी चन्द्र गवरजा...)

माँ राणी सती थारो,
आयो बासन्ती उत्सव जोर को ।। टेर ।।

सोणो सो सिणगार सज्यो है, रूत बासन्ती आई,
झूम-झम कर नाचे सगला सै पर मस्ती छाई जी ।
माँ राणी सती थारो ... ।। १ ।।

बेटा पोता थाने दादी मिलकर आज सजाई,
थारे नाम की मेहन्दी दादी सगला हाथ मण्डाई जी ।
माँ राणी सती थारो ... ।। २ ।।

लाल कसुमल थारी चुन्दड़ी भगतां के मन आई,
माँ जगदम्बा जग में थारी भोत घणी सकलाई जी ।
माँ राणी सती थारो ... ।। ३ ।।

दर्शण ताई थारा दादी सगली दुनिया आई,
''हर्ष'' भगत भगतां के सागे थारी महिमा गाई जी ।
माँ राणी सती थारो ... ।। ४ ।।

(तर्ज : घड़लो थामले...)

मेहन्दी मान्डस्युँ भवानी तेरे हाथां ने बढ़ा,
राचणी या मेहन्दी तेरे हाथां में मण्डा ।। टेर ।।

घणे जतन सुं घोल के ल्यायो,
काम करूँला थारे मन को चायो,
श्रद्धा भावना को रंग देस्युँ हाथां में चढ़ा ।। १ ।।

लाल सुरंगी रच जावेली,
हिवड़े में म्हारे बस जावेली,
पाछे प्रेम का भवानी ईं में चोपा तु लगा ।। २ ।।

''हर्ष'' भगत की आस पुरादे,
टाबरिया सुं दादी मेहन्दी मण्डाले,
मेहन्दी राच्योड़ा माँ हाथ मेरे सिरपे फिरा ।। ३ ।।

(तर्ज : दिल लूटने वाले)

वीरभूमि जिला में माँ तेरा दरबार बड़ा ही प्यारा है,
मंदिर में सजधज कर बैठी मेरी भोली माँ तारा है ।।

धामों में धाम निराला है जिसे तारापीठ बुलाते हैं,
जहाँ वार शनि और मंगल को लाखों जन शीश झुकाते हैं,
श्रद्धा से तेरे दर जो आया उसको कष्टों से उबारा है ।।

बामा खैपा माँ तारा का इक बहुत बड़ा ही भक्त हुआ,
तेरे प्यारे दास की तुझसे भी पहले माँ होती है पूजा,
उस भक्त के संकट दूर हुए जय तारा जिसने पुकारा है ।।

तेरे श्री चरणों में माँ तारा तेरा बेटा शीश झुकाता है,
तेरी किरपा हरदम बनी रहे बस इतनी किरपा चाहता है,
तेरे ''हर्ष'' की बगिया को मैया हाथों से तूने संवारा है ।।

(तर्ज : उड़ जा काले कावाँ...)

सावण आयो दादी म्हारी झूलो कदम की डार,
भगत बुलावे प्रेम सुं थाने मन में हरख अपार,
चान्दी को चमकीलो पाटो और रेशम की डोर,
सावण की रूत आई दादी पवन मचावे शोर,
कि आयो दादी सावणियो-२ ।।टेर ।।

कुहु-कुहु बोले कोयलड़ी माँ रिमझिम पड़े फुहार,
पीहु पीहु बोले आज पपीहो गावे गीत मल्हार,
झूले आन विराजो दादी, थांसु अर्ज लगावाँ,
होले होले झाला देकर थाने आज झुलावाँ, कि आयो दादी...।।

चम-चम चमके बिजली जी कोई नाचे बन में मोर,
छम-छम नाचे पँख पसार्याँ सुगण मनावे जोर,
हेलो सुणकर दादी म्हारो, बेगा सा थे आओ,
कदसुं थारी बाट उडीकां म्हारो मान बढ़ाओ, कि आयो दादी...।।

घन-घन बरसे मेवलो जी कोई सावणिये में आज,
''हर्ष'' पधारो मावड़ी थे आँगणिये में आज,
दादी जी आवे जद म्हारो, मन राजी हो जावे,
झुंझणु वाली बेगी आजा मतना युँ तरसावे,कि आयो दादी...।।

(तर्ज : जिन्दगी की ना टूटे...)

जिन्दगी में भला क्या किया, पानी चलनी से भरते रहे,
हमने समझा हमेशा यहाँ, काम नेकी का करते रहे ।।

थोड़ा सम्मान हमको मिला, कितने पागल से हम हो गये,
थोड़ा धन जो इकट्ठा किया, मद में बेकाबु हम हो चले,
झूठी शोहरत से हमतो सदा, झोली अपनी ही भरते रहे ।। १ ।।

रूप ईश्वर ने हमको दिया, हमने दर्पण को तोड़ा यहाँ,
ज्ञान थोड़ा सा अर्जित किया, दिये उपदेश कितने सदा,
अपने मुँह मियाँ मिट्ठु सदा, हम हमेशा ही बनते रहे ।। २ ।।

हमें अधिकार जबसे मिला, किया कितनों को हमने तबाह,
हम जमाने पे हँसने लगे, दुनियाँ वालों ने यश जो दिया,
क्या-क्या करना था हमको यहां, 'हर्ष' सोचो क्या करते रहे ।। ३ ।।

(तर्ज : बस इतनी तमन्ना है...)

तुझे शीश दिया रब ने, ''चरणों में ज़रा झुक ले''-२,
दो आँखे मिली तुझको, ''दर्शन तू ज़रा करले''-२ ।।

तेरे कण्ठ में भर डाला, मानो शहद भरा प्याला,
ये जीभ मिली तुझको, ''किर्तन तू ज़रा करले''-२ ।।

दरबार में नाचन को, दो पैर दिये उसने,
दो हाथ मिले तुझको, ''वंदन तु ज़रा करले''-२ ।।

ऐ ''हर्ष'' विधाता की, हर देन निराली है,
ये मन जो मिला तुझको- ''चिन्तन तू ज़रा करले''-२ ।।

(तर्ज : कागलिया गहरो गहरो...)

ओ बाला साँ बेगा बेगा आओजी,
थारे राम जी रो छुट्यो जावे धीर,
लखन रा, प्राण बचाओ जी ।। टेर ।।

बेसुध होकर, भाई पड़यो है,
संकट म्हापर, भोत बड़ो है-२,
थे जाके-३, बूँटी ले आओ जी, थारे रामजी... ।।

भोर होणे सूँ, पहल्याँ आज्यो,
भाई लखन रा, प्राण बचाज्यो-२,
थे मतना-३ देर लगाओ जी, थारे रामजी... ।।

भाई रो दुख, सह नहीं पास्युँ,
मैं भी म्हारा, प्राण गँवास्युँ-२,
थे म्हाने-३, धीर बँधाओ जी, थारे रामजी... ।।

दुख री घड़ियां, जद जद आई,
''हर्ष'' थे म्हारी, लाज बचाई-२,
थे आके-३ लाज बचाओ जी, थारे राम जी... ।।

(तर्ज : अट्ठारह डब्बे लगे...)

थर थर काँपे सारी लंका, राम नाम का बाजे डंका,
कैसी शामत आई जी-२, आग लगादी पूंछ में,
लो सारी लंका फूँकी-२, बाला ने कूद कूद के ।। टेर ।।

राजा राम जी की जय, हनुमान जी की जय,
पापी दानवों पे हुई, मेरे राम की विजय ।।

भाग रहें हैं पापी सारे, काँप रहे हैं डर के मारे,
धूधू करके ऐसे जल गई-२, जैसे छप्पर फूस के ।।

रावण जान ले जरा, मेरी मान ले जरा,
आजा राम की शरण, तेरी माफ हो खता ।।

हाहाकार मचा है भारी, राख राख है लंका सारी,
पापी तुझपे दुःख के बादल-२, आज पड़े हैं टूट के ।।

बंदर जान के तूने, छोटा मान के तूने,
अपने काल को जगाया, पापी हाथ से तूने ।।

वीर बड़ा ही है ये बंका, रावण तेरी जल गई लंका,
''हर्ष'' शरण में जल्दी आजा-२, पता राम का पूछ के ।।

(तर्ज : अगर तुम मिल जाओ...)

बंधा हुँ वचनों से तुझे युँ छोड़ ना देता,
उठी जो आँखे माता पे वो आँखे फोड़ मैं देता ।। टेर ।।

कहा है राम ने इतना, पता माँ का लगाऊँ मैं,
बनाया दूत रघुवर ने, हुकम उनका बजाऊँ मैं,
इशारा उनका हो जाता-२, भुजायें तोड़ मैं देता ।।

कहे तो एक पल में ही, तेरे चिथड़े उड़ा डालुं,
अरे पापी मैं चुटकी मे, तेरी सेना मसल डालुं,
जो होती आज्ञा तो रूख भी-२ हवा का मोड़ मैं देता ।।

अगर मैं दूत ना होता, तेरा कुनबा मिटा देता,
कहे ये ''हर्ष'' लंका को, अयोध्या में मिला देता,
उठाकर हाथों में लंका-२, अवध से जोड़ मैं देता ।।

(तर्ज : कजरारे कजरारे...)

भगतों के कष्ट मिटाये भूतों को मार भगाये,
वो इसकी किरपा पाये, जो मन से इसको ध्याये,
ओऽऽ, अपने भगतों की विपदा को है टाला-२,
भज बाला, भज बाला, तु भजले बजरंग बाला ।।

सालासर की महिमा है भारी, भगतों का भण्डार भरते हैं,
बाला जी के प्यारे दिवाने, बाबा की जयकार करते है,
ये अष्ट सिद्धि के दाता हैं, भगतों के भाग्य विधाता हैं ।।

मेहन्दीपुर में इनकी किरपा से, भगतों का उद्धार होता है,
भूतों को भगाते बाला जी, सबका बेड़ा पार होता है,
जो इनकी शरण में आता है, दुखड़ों से मुक्ती पाता है ।।

पुनरासर की महिमा क्या कहुँ, ''हर्ष'' जो भी द्वारे जायेगा,
बाबा की दया से भैया, जीवन में वो मौज उड़ायेगा,
ये देव बड़ा ही आला है, इन्हें कहते बजरंग बाला है ।।

(तर्ज : लाल दुपट्टा)

लाल लंगोटा लाल सिन्दुरी बदन पे साजे है,
राम मगन हो राम दिवाना छम छम नाचे है,
सीने में सिया राम रहते हैं, इन्हें हनुमान कहते हैं ।।

संकट मोचन बलकारी वीर बड़ा ही आला है,
राम प्रभु की विपदा को पलमें इसने टाला है,
श्री राम मनाये ये बाला, श्री राम रिझाये ये बाला,
पाँव पैजनिया इनके देखो रून झुन बाजे है ।।

हाथों में खड़ताल लिये राम की महिमा गाता है,
राम सिवा इस सेवक को और नहीं कुछ भाता है,
श्री राम का प्यारा ये बाला, सियाराम दुलारा ये बाला,
राम प्रभु को वीर सगे भाई सा लागे है ।।

सालासर में बाला जी करते वारे न्यारे है,
मेहन्दी पुर में भूतों को पटक पटक के मारे है,
सारे कष्ट मिटाये ये बाला, दुख दूर भगाये ये बाला,
''हर्ष'' कहे सुमिरन से इनके संकट भागे है ।।

(तर्ज : पंख होते तो उड़ आती रे...)

लेके संजीवन आये रे, माँ अँजनी के लाल,
देखो पवन वेग से आये रे ।। टेर ।।

इन्द्रजीत जब जीत न पाया,
ब्रह्म शस्त्र पापी ने चलाया,
भाई लखन को मुरछा जो आई,
राम प्रभु ने आज्ञा सुनाई ।। १ ।।

मुँह को खोले काल खड़ा था,
रामादल तब चितिंत बड़ा था,
बोले हनुमत जल्दी से आओ,
भाई लखन के प्राण बचाओ ।। २ ।।

रात की घड़िया बीतन को आई,
राम प्रभु को चिन्ता सताई,
बूंटी को जब ढूंढ़ न पाये,
हाथों में पर्वत को उठाये ।। ३ ।।

हुआ नहीं और होगा न दूजा,
राम का सेवक हनुमत के जैसा,
राम को जब-जब विपदा ने घेरा,
''हर्ष'' प्रभु ने इनको पुकारा ।। ४ ।।

(तर्ज लो आज आया रे...)

लो आज आया रे ''जनम दिन बाबा का''-२,
ढ़ोल ढप्पली बजाओ, झूमो नाचो और गाओ,
देखो खुशियाँ लाया रे, ''जनम दिन बाबा का''-२ ।।

अंजनी दुलारा है ये राम जी का प्यारा है,
सीता माँ की मेरा बाबा आँख का तारा है,
उल्लास लाया रे ''जनम दिन बाबा का''-२ ।। १ ।।

बन बजरंगी देखो भोले बाबा आये है,
राम जी की सेवा में वो खुद को लगाये है,
उच्छाव छाया रे ''जनम दिन बाबा का''-२ ।। २ ।।

लाल लंगोटा बांधे अंजनी का ललना,
छोटे-छोटे बालाजी का छोटा सा है पलना,
मुझे आज भाया रे ''जनम दिन बाबा का''-२ ।। ३ ।।

''हर्ष'' दिवाने सारे ठुमका लगायेगें,
आज खुशी से देखो भंगड़ा पायेगें,
बड़ा रास आया रे ''जनम दिन बाबा का''-२ ।। ४ ।।

(तर्ज : दिल्ली का लाला...)

सबका खोलेगा किस्मत का ताला,
भजेगा जो भी मनसे बजरंग बाला,
बाबा भगतों का है रखवाला,
भजेगा जो भी मनसे बजरंग बाला ।।

लाखों की इसने बिगड़ी बनाई, तूने क्युँ बंदे देरी लगाई,
जल्दी से आजा इसको रिझाले, सोई हुई तकदीर जगाले,
इसने सेवक के दुखड़ों को टाला, भजेगा जो भी मन से बजरंग बाला ।।

लाल सिन्दूर जो इनको चढ़ाता, मन इच्छा फल बाबा से पाता,
भगतों में सरताज कुहाये, राम प्रभु की महिमा ये गाये,
ये है भगतों में भक्त बड़ा आला, भजेगा जो भी मन से बजरंग बाला ।।

''हर्ष'' शरण में इनके जो आया, भूतों को इसने मार भगाया,
श्रद्धा से जोभी सर को झुकाता, वीर बलि की किरपा वो पाता,
ये तो धो देगा उसका दिवाला, भजेगा जो भी मन से बजरंग बाला ।।

(तर्ज : परदेशिया चली रे चली रे...)

हनुमान जीSS, कब आयेगें मेरे राम जी,
दाव पे लगी है देखो, रघुकुल की आन जी ।।

छल्ला निशानी तेरे, संग क्युँ भिजाये,
अपनी सिया को लेने, खुद क्युँ ना आये,
रामजी न आये तो मैं, तज दूंगी प्राण जी ।। १ ।।

पथराई आँखे उनका, रस्ता निहारती,
पिंजरे में कैद होके, जानकी पुकारती,
भूल गई मैं अब तो, खुद की पहचान जी ।। २ ।।

चूड़ामणी तुम लेके, जल्दी से जाओ,
हाल सिया का जाके, राम को बताओ,
आके सम्भालेगें कब, मेरे भगवान जी ।। ३ ।।

''हर्ष'' प्रभु से कहना, देर क्युँ लगाई,
लेकर के वानर सेना, करेगें चढ़ाई,
तोड़ेगे उस पापी का, आके अभिमान जी ।। ४ ।।

(तर्ज : प्रेम से भावों से...)

अगर तु ना होता, सहारा ही नहीं होता,
भँवर में डूब जाता मैं, किनारा ही नहीं होता ।। टेर ।।

बिसारा है जमाने ने, तुम्हारा साथ पाया है,
मुसीबत में मेरे सिरपे, तेरा ही हाथ पाया है,
थाम जो तु ना लेता तो-२, ठिकाना ही नहीं होता ।। १ ।।

अगर तु साथ ना देता, कोई संगी नहीं होता,
न मिलती खाने को रोटी, सदा तंगी में ही रहता,
मैं भूखा मर जाता-२, गुजारा ही नहीं होता ।। २ ।।

मेरे सब काम कर डाले, बस इतना काम करदे तु,
जो बाकी रह गये बाबा, उन्हें भी पूरा करदे तु,
मेरा तो गिरके युँ उठना-२, दुबारा ही नहीं होता ।। ३ ।।

तमन्ना ''हर्ष'' की बाबा, सदा दरबार आऊँ मैं,
जमाने की नहीं चाहत, तेरा युँ साथ पाऊँ मैं,
तेरे बिन नामो निशां-२, हमारा ही नहीं होता ।। ४ ।।

(तर्ज : देखो पवन भी....)

अरे रेरे अरे रे रेरे रे रे रे,
देखो कन्हैया, मुस्का रहा है, मनवा मोहे,
होले-होले चुपके चुपके अरे रे रे रे...
तान सुरीली बिखरा रहा है, मुरली बाजे,
होले होले - चुपके चुपके ... अरे रे रेरे... ।। टेर ।।

नीली-नीली झील सी गहरी, श्याम तुम्हारी आँखे हैं,
ऐसा लगता है हमको ज्युँ, करती हमसे बाते हैं,
होठो पे मुस्कान है प्यारी, संग में राधा प्यारी है,
युगल छवी पे मुरली वाले, जाये हम बलिहारी है,
श्याम हमें ये, भरमा रही है, सुन्दर जोड़ी ।। होल-होले...।।
करने को दीदार तुम्हारा, दूर से सेवक आये हैं,
आँखों में तस्वीर तुम्हारी, आज बसाके लाये हैं,
नैनों को श्रृंगार तुम्हारा, श्याम बड़ा ही भाता है,
श्याम सलोना तेरा मुखड़ा, चान्द नज़र ज्युं आता है,
तीर नज़र के, छोड़ रहे हो, दिल पे मेरे ।। होल-होले...।।
एक नज़र देखेगा जो भी, तुझमें ही खो जायेगा,
तान सुनेगा मीठी-मीठी, सुध सारी बिसरायेगा,
भोली-भाली चितवन तेरी, मन में आज समाई है,
''हर्ष'' कहे मुस्का कर तूने, नीन्दे श्याम चुराई है,
आज जिया को, तड़पा रही है, वंशी तेरी ।। होल-होले...।।

(तर्ज : इक बार तो कन्हैया हम जैसों...)

आँखों में कैद कर लिया हमने तो आपको,
जब जी करें निहार ले सांवलिये आपको ।। टेर ।।

देखी जो इक झलक तेरी दीवाने हो गये-२,
ओझल बतादे क्युँ करें नैनों से आपको ।। १ ।।

हमको तेरी अदाओं ने घायल ही कर दिया-२,
मरहम लगाने की कहाँ फुर्सत है आपको ।। २ ।।

हुए जा रहे हैं बावरे तेरे नाम के तो हम-२,
कुछ भी फिकर है क्या भला भगतों की आपको ।। ३ ।।

कान्हा गली में आपकी ये ''हर्ष'' लुट गया-२,
कैसे सुनाऊँ हाले-दिल चितचोर आपको ।। ४ ।।

(तर्ज : ओ मैया श्रृंगार तेरा लाल है...)

ओ कान्हा श्रृंगार बेमिसाल है,
घुंघराले गजब तेरे बाल हैं ।। टेर ।।

श्याम वरण है श्यामल मुखड़ा,
अम्बर पे ज्युँ चाँद का टुकड़ा,
केशरिया तिलक सोहे भाल है,
जलवा ये बड़ा ही कमाल है ।। १ ।।

सोहे अधर पे तेरे मुरलिया,
पैरों में बाजे छम-छम पैजनिया,
देखे जो वही तो मालामाल है,
दर्शन करके ये मनवा निहाल है ।। २ ।।

मुख मण्डल पे मोटी-मोटी अंखिया,
''हर्ष'' करे जैसे हमसे ये बतियां,
भगतों पे बिछाया तूने जाल है,
हम सबका बड़ा ही बुरा हाल है ।। ३ ।।

(तर्ज : ओ बाबुल प्यारे....)

ओ खाटू वालेऽऽऽ, घटायें घिर-घिर के आती,
चली है जोरों की आन्धी, सम्भालो हारे के साथी, होऽऽऽ ।।

मैंने सुना है हारे हुए को देते हो बाबा सहारा,
मुझको भी लेलो अपनी शरण में मैं भी हूँ बेटा तुम्हारा,
जल्दी आओ दीनानाथ, पकड़ो आके मेरा हाथ,
आके दुखड़ों से मुझको बचा ऽऽऽ ।। १ ।।

तेरा भरोसा जिसने किया है उसको क्युँ चिन्ता सताये,
माझी बना तू जिसका उसे फिर तूफां भला क्या डराये,
मेरी नैया है मझधार, थामो मेरी भी पतवार,
मेरी कश्ति किनारे लगाऽऽऽ ।। २ ।।

''हर्ष'' जहाँ में जिसको दयालु तेरा ये साथ मिला है,
तेरी दया से तेरे भगत का तूफां में दीपक जला है,
झोंका तेज हवा का है, आजा देर भला क्या है,
अब तो लीले पे चढ़के तू आ ऽऽऽ ।। ३ ।।

(तर्ज : ऐ फूलो की रानी...)

ऐ गोकुल के ग्वाले, ऐ रंगत के काले,
तेरा मुस्कुराना गजब ढ़ा गया,
हैं मदहोश सारे, वो जमुना किनारे,
ये बंशी बजाना गजब ढ़ा गया ।। टेर ।।

हमें याद है हर शरारत तुम्हारी,
वो कंकर से फोड़ी थी मटकी हमारी,
वो चुपके से आना वो कपड़े चुराना,
चुराकर सताना गजब ढ़ा गया ।। १ ।।

कदम के तले रास तुमने रचाया,
वो होठों से वंशी को तुमने लगाया,
वो प्यारी सी मुरली की धुन को बजाना,
बजाकर नचाना गजब ढ़ा गया ।। २ ।।

तेरा ''हर्ष'' तुझपे है कुर्बान कान्हा,
बड़ा तेरा मुझपे है एहसान कान्हा,
जमीं से उठाकर गले से लगाना,
वो अपना बनाना गजब ढ़ा गया ।। ३ ।।

(तर्ज : दिल तोड़ने वाले तुझे....)

ऐ बाँसुरी वाले ''तुझे दिल ढूंढ रहा है''-२,
आजा जरा ओ साँवरे निष्ठुर क्युँ बना है ।। टेर ।।

क्युँ इतना तु तरसाये, बड़ा हमको सताये,
याद आये तेरी श्याम, ''हमें बेहद रूलाये''-२,
वो घाव दिखायें जो हमें तुमने दिया है ।
ऐ बाँसुरी वाले.... ।। १ ।।

गर तुम ना सुनोगे, बता किसको सुनाऊँ,
आँखों में बसे ख्वाब, ''भला किसको दिखाऊँ''-२,
सीने में तेरे प्यार का सैलाब भरा है ।
ऐ बाँसुरी वाले.... ।। २ ।।

इतनी सी ये हसरत है, मेरे घर भी तु आये,
चौखट पे खड़ा हुँ मैं, ''पलक अपनी बिछाये''-२,
ये ''हर्ष'' तेरा साँवरे, गुमसुम सा खड़ा है ।
ऐ बाँसुरी वाले.... ।। ३ ।।

(तर्ज : भरदे मेरे पल्ले पहाड़ा...) (सरदूल सिकंदर)

करदे मेरी बल्ले - सहारा तेरा श्याम सांवरे,
सोई किस्मत आज जगादे,
ऐसी तू तकदीर बनादे, गाड़ी सरपट चल्ले ।। टेर ।।

माया की दुनिया में बाबा, ''इज्जत दौलत वालो की''-२,
पूछ यहाँ पर हरदम होती ''ऊँची शोहरत वालो की''-२,
कोठी बंगला कार दिलादे- पैसो की बौछार लगादे,
कुछ ना मेरे पल्ले-सहारा तेरा श्याम सांवरे.... ।। १ ।।

मैं जोगी हूँ, नाम का तेरे- ''हार के दर पे आया हूँ''-२,
जिसको मैंने प्रेमी समझा - ''उससे धोखा खाया हूँ''-२,
दया करो मुझपे किरपालु, मेरे भी है देव दयालु,
धन से भरदे गल्ले - सहारा तेरा श्याम सांवरे.... ।। २ ।।

तेरे होते श्याम तुम्हारा, ''बेटा क्युँ दुख पाये रे''-२,
''हर्ष'' बड़े अपमान सहे है, ''और सहा ना जाये रे''-२,
सुनले ऐ हारे के सहारे - तेरे भरोसे संकट सारे,
पल में मेरे टल्ले - सहारा तेरा श्याम सांवरे.... ।। ३ ।।

(तर्ज : कन्हैया ले चल परली पार)

कन्हैयो दोड़्यो आयो जी-२,
भाव भक्ति को भूखो कान्हो रुक ना पायो जी ।। टेर ।।

नैणा नानी नीर बहायो,
भामा रुकमण के संग आयो,
दान दायजो मोकलो ल्याओ,
धर्म को भाई बणके मोहन, भात भरायो जी ।। १ ।।

भोली भाली करमा बाई,
थाली भर खीचड़लो ल्याई,
बनवारी के भोग लगाई,
धावलिये की ओट बैठकर, खीचड़ खायो जी ।। २ ।।

सखा सुदामा मिलणे आयो,
एक पोटली चावल ल्यायो,
देणे में थोड़ो सकुचायो,
छीन पोटली घणे चाव सुं, तन्दुल खायो जी ।। ३ ।।

''हर्ष'' श्याम सुं प्रीत लगाई,
प्रेम दिवानी मीरा बाई,
विष को प्यालो कण्ठ लगाई,
जहर के प्याले ने झट अमृत, श्याम बणायो जी ।। ४ ।।

(तर्ज : कहे तोसे सजना ये तोहरी....)

कहे तोसे छलिया, ये तोहरी गुजरिया,
जियरा जलाये मोरा, तोहरी बाँसुरिया ।। टेर ।।

सौतन बनी है तोहरी, बंशी निगोड़ी रे,
पगला गई हूँ कान्हा, मैं तो थोड़ी-थोड़ी रे,
भूल गई हूँ मैं तो, घर की डगरिया ।। १ ।।

माखन बिलोना मोहे, अब नहीं भाये रे,
जमुना नहाने अब तो, गुजरी ना जाये रे,
पनघट पे छलके मोरे, सिर पे गगरिया ।। २ ।।

तोहरी दिवानी मोहे, बोले ये जमाना रे,
दुनिया कहे रे तु भी, हमरा दिवाना रे,
चरचे करे हैं अपने, सारी नगरिया ।। ३ ।।

वंशी हुई है बैरन, ''हर्ष'' कन्हाई रे,
होले से तूने आधी, रात में बजाई रे,
छनक उठी है छम छम, पग की पायलिया ।। ४ ।।

(तर्ज : पानी रे पानी....)

कान्हा रे कान्हा तेरा रंग काला, तेरी दिवानी सारी, बृज बाला,
कान्हा रे कान्हा, हो कान्हा, कान्हा रे कान्हा होSSS ।।

तेरे काले रंग ने हमपे, डाले ऐसे डोरे,
राम ना जाने क्या हो जाता, होते जो तुम गोरे,
दूध सरीखे उजले मन के, तन का रंग है श्याम ।।
कान्हा रे कान्हा.... ।। १ ।।

होठों से जब लगे बांसुरिया, होता जियरा घायल,
राधा जब थिरके तो छम-छम, छम-छम बजती पायल,
कान्हा आजा - कान्हा आजा, मुरली मधुर बजा दे,
तान छोड़ कर, आज झूम कर-२, हमको श्याम नचा दे,
बिन मुरली के अब गुजरी का, जीना हुआ हराम ।।
कान्हा रे कान्हा.... ।। २ ।।

तेरा रंग चढ़ा है हमपे, चाहे जो करवाले,
''हर्ष'' कहे ऊँगली पे हमको, कान्हा आज नचाले,
कसम तुम्हारी हमको कान्हा, लेंगे ना आराम ।।
कान्हा रे कान्हा .... ।। ३ ।।

(तर्ज : तेरे होठों के दो फूल...)

कारोबार मेरो साँवरो चलावे,
मेरी Balance Sheet कान्हुड़ो बणावे,
जीमे कदे ना घाटो आवे जी-आवे जी ।। टेर ।।

मैं तो किर्तन में रम जाऊँ, मेरी गद्दी में बाबो बिराजे,
मने चिन्ता फिकर है क्याँकी, खाटू वालो है जद मेरे सागे,
लेणे देणे को हिसाब, राखे हाथां मांही आप-२,
मेरी रोकड़ यो सेठ मिलावे जी- मिलावे जी ।। १ ।।

मेरे धन्धे में लागत कोनी, ना रुपियो, ना आना, ना पाई,
मैं बैठ्यो मौज उड़ाऊँ, करूँ श्याम नाम की कमाई,
मेरो साथी लखदातार, मेरा भर्‍या रहवे भण्डार-२,
मेरी विपदा में आडो आवे जी-आवे जी ।। २ ।।

अन्न धन लिछमी को दाता, मेरो बाबो है यो खाटू वालो,
मैं ''हर्ष'' भला के सोचुँ, मेरी बगिया को यो है रूखालो,
मेरे बाबा की के बात, राखे मेरे सिर पे हाथ-२,
मेरो पग-पग पे साथ निभावे जी-निभावे जी ।। ३ ।।

(तर्ज : जाने वो कैसे लोग थे जिनको...)

कितने निराले भक्त थे जिनको श्याम का प्यार मिला,
श्रद्धा से जब दर्शन मांगा पल में दीदार मिला ।। टेर ।।

मीरा जैसा प्रेम दिवाना और नहीं दूजा,
कौन भला यहाँ कर सकता है करमा सी पूजा,
नरसी की हुण्डी सिकराने खुद करतार चला ।। १ ।।

चली डूबने नानी बाई झट दौड़ा आया,
खंभ फाड़ प्रह्लाद बचाया अद्भुत् है माया,
भव सिन्धु से भीलनी तर गई जूठे बेर खिला ।। २ ।।

कलिकाल में श्याम बहादुर ने इसको पाया,
मोर छड़ी के इक झाड़े से ताला खुलवाया,
''हर्ष'' दिवानों के खातिर इसका दरबार खुला ।। ३ ।।

(तर्ज : जिसको तेरा भरोसा...)

किर्तन की रात बीती, अब भोर हो रही है,
आने में क्युँ कन्हैया, अब देर हो रही है ।। टेर ।।

तुझे रात भर कन्हैया, दुखड़े सभी सुनाये,
रखे थे जो छुपा कर, तुझे जखम वो दिखाये,
अब टीस ये निगोड़ी, पुरजोर हो रही है ।। १ ।।

बिन माझी की ये नैया, आकर जरा सम्भालो,
मझधार में है अटकी, बाबा इसे निकालो,
मेरी नाव धीरे धीरे, कमजोर हो रही है ।। २ ।।

कब इम्तहां हमारा, छोड़ोगे श्याम लेना,
इतना समझले आखिर, तुझको पड़ेगा आना,
तेरी ''हर्ष'' को जरूरत, बड़ी जोर हो रही है ।। ३ ।।

(तर्ज : कौन कहता है भगवान...)

कोई कहने लगा श्याम आये नहीं,
मैंने पूछा क्युँ हाथ उठाये नहीं ।। टेर ।।

कान्हा आये मगर कुछ खाये नहीं,
छिलके बिदुरानी से क्युं खिलाये नहीं ।। १ ।।

श्याम किर्तन में संग मेरे नाचे नहीं,
बनके गोपी उन्हें क्युँ नचाये नहीं ।। २ ।।

मेरी हुण्डी कन्हैया भुनाये नहीं,
बनके नरसी भगत क्युँ दिखाये नहीं ।। ३ ।।

''हर्ष'' होले से वो मुस्काये नहीं,
प्रेम से भाव से क्युँ रिझाये नहीं ।। ४ ।।

(तर्ज : जदो कदी तैनु मेरी...)

खाटू वाले बाबा तेरी याद सताये रे,
रो रो भगत तेरा आज बुलाये रे ।। टेर ।।

सीने के घाव किसे जाके दिखाऊँ,
तू ना सुने तो बोलो ''किसको सुनाऊ''-२,
तेरे सिवा दुख मेरे कौन मिटाये रे ।। १ ।।

गर जो तु रूठ गया, मैं कहाँ जाऊँगा,
छोड़ना ना साथ मेरा, ''मैं मर जाऊँगा''-२,
तेरे सिवा दुख मेरा कौन मिटाये रे ।। २ ।।

छोड़ के तु काम सारे आजा मेरे साँवरे,
गिर ही ना जाऊँ कहीं ''आके जरा थाम रे''-२,
''हर्ष'' दिवाने को तु काहे तरसाये रे ।। ३ ।।

(तर्ज : तेरे मेरे बीच में....)

खाटू वाले श्याम जी, करता है ये विनती दिवाना,
मेरे घर भी आना, मेरे घर भी आना ।। टेर ।।
आया बुढ़ापा अब मैं चलने ना पाऊँ,
तुही बतादे कैसे दर तेरे आऊँ,
मुश्किल हुआ है आना जाना ।। मेरे घर .... ।। १ ।।
जब तक थी शक्ति तेरी चौखट पे आया,
चरणों में बैठ तेरे बड़ा सुख पाया,
बेबश हुआ है अब दिवाना ।। मेरे घर .... ।। २ ।।
घर का पता क्या बाबा तु नहीं जाने,
प्रेमी हुँ तेरा आजा बंधन निभाने,
रूखा सुखा तु भी आके खाना ।। मेरे घर .... ।। ३ ।।
द्वारे पे सूआ तेरा स्वागत करेगा,
तुलसी का बिड़ला मेरे घर में मिलेगा,
सेवक का सुनले तू ठिकाना ।। मेरे घर .... ।। ४ ।।
जंगल से मोर वाली पाँखुड़ी मंगाई,
तेरे लिये बाँस वाली बाँसुरी बनाई,
''हर्ष'' तु होले से बजाना ।। मेरे घर .... ।। ५ ।।

(तर्ज : अकेले हैं चले आओ...)

खुशी दे दो या गम दे दो, सहेगें,
हमें जिस हाल में रखो, रहेगें ।। टेर ।।

तुझे दिल चाहता है, तुझे दिल पूजता है,
ना अब अपना है कोई, तुझे बस ढूंढ़ता है,
तेरी यादों में बस आहें, भरेगें ।। १ ।।

हमें तुम ना भुलाना, कभी भी ना रुलाना,
तेरे चरणों में अब तो, हमारा हो ठिकाना,
जुदा तुमसे नहीं कान्हा, रहेगें ।। २ ।।

तुझे हम ''हर्ष'' चाहें, तेरा दिल जीत पायें,
रहें जिस हाल में भी, तेरे ही गीत गाये,
तुम्हारे है जमाने से, कहेगें ।। ३ ।।

(तर्ज : जब से देखा तुझे मुरली वाले...)

चल पड़े हो छुड़ा हाथ मेरा, माना निर्बल बड़ा हूँ मैं दाता,
मेरे हृदय से जाकर दिखाओ, मानु तुझको सबल मैं विधाता ।।

मैं तो पापी पतित हुँ घनेरा, पर जैसा हूँ सेवक हूँ तेरा,
बेटा लायक हो चाहे नालायक, पर पिता तो हमेशा निभाता ।।

थाम के रखना मेरी कलाई, वरना दुनिया में होगी हंसाई,
जो जमाने से हारा हुआ है, उसे चरणों में तुही बिठाता ।।

जा सकोगे ना दामन छुड़ाकर, रोक ही लेगें अपना बनाकर,
मैं तो तेरा हूँ अब तु है मेरा, बड़ा प्यारा है अपना ये नाता ।।

मेरे चारों तरफ जग का मेला, फिर भी पाता हूँ खुद को अकेला,
रास आये ना दुनिया के मेले, ''हर्ष'' तेरे सिवा कुछ ना भाता ।।

(तर्ज : कोई कहता कि शक्ल...)

चाहे मांगो चान्दी सोना, चाहे चैन अंगुठी गहना,
चाहे मांगो माल खजाना, या फिर खरा रूपैया,
खुल के मांग ले, सब कुछ देता मेरा कन्हैया ।। टेर ।।

थोड़ा मांगो ज्यादा देगा ''ऐसा है दातार''२,
कलयुग का है देव निराला, ''खाटू का सरदार''-२,
सच्चे मन से जो मांगोगे, मिल जायेगा भैया ।
खुल के मांग ले.... ।। १ ।।

कोठी बंगला महल मालिया ''नौकर चाकर देगा''-२,
दिल के हर अरमान तुम्हारे ''पूरे ये कर देगा''-२,
थामेगा पतवार चलेगी, बिन पानी के नैया ।
खुल के मांग ले.... ।। २ ।।

शर्त एक है सुनले प्यारे ''करले साफ रवैया''-२,
''हर्ष'' रहेगा संग में तेरे ''बनके तेरा खिवैया''-२,
तपते रेगिस्तान में तुझको, देगा शीतल छैंया ।
खुल के मांग ले.... ।। ३ ।।

(तर्ज : म्हारी हथेल्याँ रे बीच....)

चालो श्याम धणी की ज्योत घर में लेवाँ म्हारा ढोला जी,
थे भगतां ने बुलाल्यो जी ।। टेर ।।

फुलड़ा मंगाया सोणा गजरा बणाया,
चालो श्याम धणी ने हाथां सुं सजावाँ म्हारा ढोला जी,
थे भगतां ने बुलाल्यो जी ।। १ ।।

खीर बणवाई ढ़ोला चूरमो बणायो,
चालो श्याम धणी ने प्रेम सुं जिमावाँ म्हारा ढोला जी,
थे भगतां ने बुलाल्यो जी ।। २ ।।

ढ़फली मंगाई देखो चंग भी मंगाया,
चालो श्याम धणी ने मीठा भजन सुणावाँ म्हारा ढ़ोला जी,
थे भगतां ने बुलाल्यो जी ।। ३ ।।

घूघरा मंगाया ''हर्ष'' पैरां में बंधाया,
चालो श्याम धणी के किर्तन मांही नाचां म्हारा ढ़ोला जी,
थे भगतां ने बुलाल्यो जी ।। ४ ।।

(तर्ज : तेरा दिल है बड़ा विशाल...)

चुप क्यूँ है कुछ तो बोल ओ खाटू वाले,
मेरे आँसु है अनमोल ओ खाटू वाले ।। टेर ।।

किसको सुनाऊँ जाके मेरे दिल का हाल रे,
भगतों की सुनने वाले मुझे भी सम्भाल रे,
तेरा दर छोड़ बाबा बोल कहाँ जाऊँ मैं,
सुनता नहीं है कोई किसको सुनाऊँ मैं,
अब अपनी आँखे खोल, ओ खाटू वाले ।। १ ।।
देख मेरे आँसुओं की लाज तेरे हाथ है,
दीन का दयाल है तु तुही दीना नाथ है,
ताने देगें जग वाले युहीं छोड़ देना ना,
आस की ये डोरी बाबा युहीं तोड़ देना ना,
ये दुनिया करे मखोल, ओ खाटू वाले ।। २ ।।
जान के तुझे ही अपना द्वार तेरे आया हुँ,
अपने पराये का भी भेद जान पाया हुँ,
इज्जत न जाने देना सेवक की सांवरे,
''हर्ष'' छलकते आँसु आके मेरे थाम रे,
रखले इज्जत का मोल, ओ खाटू वाले ।। ३ ।।

(तर्ज : जरा जोड़ले सजनवा...)

जरा देखले कन्हैया, पलकें उठाके जरा देखले ।। टेर ।।

हम है तेरे प्रेमी कान्हा तु माने ना माने,
तेरी गली में दिल है खोया हमतो इतना जाने ।। १ ।।

तेरे दर्शन को दिवाने तरसे श्याम कन्हाई,
कबसे तेरी राह निहारे आँखे है पथराई ।। २ ।।

सोचा न था तेरे नाम के बन जायेगें जोगी,
प्रेम का रोग लगा है ऐसा बन गये हमतो रोगी ।। ३ ।।

एक नजर तु देखले हमको हम है मीत तुम्हारे,
''हर्ष'' कहाँ जायेगें बोलो अब ये प्रीत के मारे ।। ४ ।।

(तर्ज : किसी की नैया का...)

जरा सा ये सोचो, दानी कहलाते हो,
जरा सा देते हो, हमको बहलाते हो,
जी भर के देने में, ''काहे शरमाते हो''-२ ।। टेर ।।

याचक बना है, सेवक तुम्हारा,
तेरी दया बिन, मुश्किल गुजारा,
दीनों की हालत पे, ''बैठे मुस्काते हो''-२ ।। १ ।।

देने का बाबा, करते हो वादा,
जी भरके दे दो, मांगु ना ज्यादा,
झूठे वादे करके, ''हमको भरमाते हो''-२ ।। २ ।।

दीनों के बल पे, तु दानी कुहाता,
दीनों को देने में, तु क्युँ लजाता,
जब दानी बन बैठे,''फिर क्युँ घबराते हो''-२ ।। ३ ।।

''हर्ष'' समझले, अब ना सुनुंगा,
आज मैं दर से, लेकर हटुगा,
जख्मों से भरा सीना, ''तुम ही सहलाते हो''-२ ।। ४ ।।

(तर्ज : स्वर्ग से सुन्दर....)

जिस नैया के श्याम धणी हो, खुद ही खेवन हार,
वो नैया पार ही समझो, बिना पतवार ही समझो ।। टेर ।।

तूफां में कश्ति चाहे, हिचकोले खाये,
भंवर के थपेड़े चाहे, जितना डराये,
जग का खेवनहारा थामे, खुद जिसकी पतवार ।। १ ।।

माझी बनेगा जब ये, साँवरा तुम्हारा,
मझधार में भी तुझको, मिलेगा किनारा,
जिसका रक्षक बन कर बैठा, लीले का असवार ।। २ ।।

''हर्ष'' तु जीवन नैया, इसको थमा दे,
इसके भरोसे प्यारे, मौज तु उड़ा ले,
हाथ पकड़ले जब ये तेरा, फिर किसकी दरकार ।। ३ ।।

(राग रचयिता : विकास कपूर मो॰ :९८३०२१०४३७)

जी ना सकुं बाबा मैं तो तेरे बिन, कैसे रहुँ कान्हा मैं तो तेरे बिन,
होना नहीं मुझसे जुदा, होSS हुआ मैं तुझपे फिदा ।।

दौलत ना मांगता, शोहरत न मांगता,
दर्शन की तेरे बाबा, मोहलत मैं मांगता,
चाहे तु बिसार दे, चाहे दुत्कार दे,
शरण पड़ा हूँ तेरे, मुझे थोड़ा प्यार दे ।।
जी ना सकुं.... ।। १ ।।

रिश्ते-नाते तोड़ के, जग सारा छोड़ के,
प्रीत की चदरिया बाबा, आया मैं तो ओढ़ के,
भगती के भाव दे, करूणा की छांव दे,
श्रद्धा की गंगा में, कश्ति को बहाव दे ।।
जी ना सकुं.... ।। २ ।।

माटी का खिलौना हूँ, चाहे जैसे खेल तु,
जैसा भी हूँ तेरा हूँ, बस मुझे झेल तु,
साथ तेरा चाहूँगा, दूर रह ना पाऊँगा,
''हर्ष'' जुदा ना होना, मैं तो मर जाऊँगा ।।
जी ना सकुं.... ।। ३ ।।

(तर्ज : जिया धड़क -धड़क...)

तुझे देख देख कान्हा, तेरी प्रीत क्या है जाना,
मैंने तो बस ये माना, मैं हो गया दिवाना,
देखो ना ऐसे मोहे श्याम हाय, ''जिया मचल-मचल''-३ जाये ।।

कितना मैं चाहुँ तुझे, कैसे बताऊँ तुझे,
देखुँ मैं जलवे तेरे, मन के आंगन में मेरे,
पाऊँ तुझे ही दिल के पास हाय, ''जिया मचल-मचल''-३ जाये ।।

चरणों में दे दे जगह, जीने की दे दे वजह,
किरपा जो तेरी पाऊँ, भव से मैं भी तर जाऊँ,
इतना तूं कर एहसान हाय, ''जिया मचल-मचल''-३ जाये ।।

नजरों में तू है बसा, छा गया तेरा नशा,
मैंने हर रिश्ता तोड़ा, तुझसे बस नाता जोड़ा,
''हर्ष'' हुआ तु मेरा श्याम हाय, ''जिया मचल-मचल''-३ जाये ।।

(तर्ज : राधे-राधे जपेजा सुबह शाम...)

तुझे हँसता मिलेगा मेरा श्याम खाटू की गलियों में ,
जाओ जाके-२, पुकारो जरा नाम खाटू की गलियों में ।।

हारे का दुनिया में भगतो बस ये एक सहारा,
उसका साथ निभाया जिसने मन से नाम पुकारा,
दुख हरता मिलेगा मेरा श्याम खाटू की गलियों में ।। १ ।।

बच्चा बूढ़ा नर और नारी हर कोई श्याम दिवाना,
खाटू के कण-कण में प्यारे इसका एक ठिकाना,
वहाँ रमता मिलेगा मेरा श्याम खाटू की गलियों में ।। २ ।।

फागुन के मेले में आते लाखों लाख दिवाने,
हाथों में निशान लिये वो मंदिर शिखर चढ़ाने,
संग चलता मिलेगा मेरा श्याम खाटू की गलियों में ।। ३ ।।

ग्यारस को खाटू में सारे सेवक रात जगाते,
''हर्ष'' कहे मस्ती में सारे अमृत रस बरसाते,
संग नाचे भगत के श्याम खाटू की गलियों में ।। ४ ।।

(राग : गजल)

तेरी धूली लगी जबसे माथे पे हम,
क्या से क्या हो गये देखते देखते-२,
तेरे जलवो ने कान्हा क्या जादू किया,
हम फिदा हो गये देखते देखते-२ ।। १ ।।

अबसे पहले तुझे हमने देखा ना था,
हमपे छाई है अब तेरी दीवानगी,
जिन गमो ने सताया था हमको बड़ा,
लापता हो गये देखते देखते-२ ।। २ ।।

गैर की बात करने से क्या फायदा,
अबतो अपनो पे हमको भरोसा नहीं,
अपना साया समझते थे जिनको सदा,
वो जुदा हो गये देखते देखते-२ ।। ३ ।।

(२)

उनके वादों की सुनिये जरा दास्तां,
हम तो तेरे हैं हरदम ये कहते रहे,
पाठ हमको वफा का पढ़ाते थे जो,
बेवफा हो गये देखते देखते-२ ।। ४ ।।

हमने देखे हैं अपनो के ऐसे करम,
अपना कहने में अब उनको आती शरम,
जिनको ऊँगली पकड़ कर चलाया कभी,
वो खुदा हो गये देखते देखते-२ ।। ५ ।।

अब तो ये सोच कर ''हर्ष'' आ ही गये,
तेरे दर पे उमरिया गुजर जायेगी,
झूठे रिश्तों ने जकड़ा था अब तक हमें,
अलविदा हो गये देखते देखते-२ ।। ६ ।।

(राग रचयिता- प्रवीण बेदी फोन न॰ २६६५२०२९)

तेरे मेले में रंग बरसे, तेरे चौखट पे धन बरसे,
फागण में खाटू जावण ने, भगतां रो मन तरसे ।।

फागणिये में सेठ साँवरो, झोली भर कर बाँटे,
जितणो चावो उतणो पावो, कदे नहीं पण नाटे,
चरणां में जो शीश झुकावे, हाथ धरे तेरे सिर पे ।। १ ।।

मन इच्छा जो लेकर जावे, मन की आस पुरावे,
आवणिये ने गले लगावे, सगला कष्ट मिटावे,
बेगो सो तु चाल बावला, मतना दर-दर भटके ।। २ ।।

देर करो क्युँ मेले माही, थे भी खाटू चालो,
''हर्ष'' चालके सेठ श्याम की, थे भी किरपा पाल्यो,
फागणिये की धूम मचेली, खाटू माही जमके ।। ३ ।।

(तर्ज : कभी बेकसी ने मारा कभी बेबसी)

दोहा : ये कमल है या है चान्द पूनम का, या तराशा हुआ कोई नगीना है ।
इस गजब के निखार ने तेरे, मेरे दिल का करार छीना है ।।

तेरी इस अदा ने मारा, तेरी उस अदा ने मारा,
किस किस का नाम ले हम, तेरी हर अदा ने मारा ।।

खूबसूरत अदा का खजाना है तू,
धड़कते दिलों का बहाना है तू,
हम होश खों चुके है, मदहोश हो चुके हैं,
आँखो में जो बसी है, उस मयकदा ने मारा ।। १ ।।

कन्हैया का खयाल दिल से निकलता नहीं,
दिल ये तेरे सिवा कहीं बहलता नहीं,
मेरी तुझसे है करीबी, ये है मेरी खुशनसीबी,
अपना मुझे बनाया, तेरी उस वफा ने मारा ।। २ ।।

गुलाबों की महक तुझमें समाई है,
तू कविता है गजल है रूबाई है,
तेरा ''हर्ष'' गा रहा है, तुझको रिझा रहा है,
मेरा दिल चुरा लिया है, तेरी उस खता ने मारा ।। ३ ।।

(तर्ज : नि मैं शगन मनवां....)

तेरी ज्योत जगाऊँ- तेरी महिमा गाऊँ- तेरे चरणों में झुक जाऊँ,
मैं तुझसे अरज लगाऊँ, बस इतनी किरपा चाहूँ,
तु मुझे प्यार दे - आ मुझे दीदार दे ।। टेर ।।

दुनिया को छोड़ आया, मैं तो तेरे द्वार पे -२,
दुखड़े हजार मिले, बैरी संसार में,
तुझे दिल के घाव दिखाऊँ,
दुखड़ो को सह ना पाऊँ, बस इतनी किरपा चाहूँ,
तु मुझे प्यार दे - आ मुझे दीदार दे ।। १ ।।

आजा मेरे हाथ को तु, जरा आके थाम ले-२,
मुश्किलों में मेरे बाबा, आके मेरा साथ दे,
तुझे दिल का हाल सुनाऊँ,
पग पग पे ठोकर खाऊँ, बस इतनी किरपा चाहुँ,
तु मुझे प्यार दे - आ मुझे दीदार दे ।। २ ।।

सुनता हुँ श्याम तुही, हारे का सहारा है-२,
''हर्ष'' तुम्ही से बाबा, दीनों का गुजारा है,
तेरी दया की भिक्षा पाऊँ,
ये जीवन धन्य बनाऊँ, बस इतनी किरपा चाहुँ,
तु मुझे प्यार दे - आ मुझे दीदार दे ।। ३ ।।

(तर्ज : जिनके सपने हमें रोज आने लगे...)

तेरी किरपा के चरचे सुने मैंने श्याम, आया मैं तेरे धाम,
देखो-देखो दयालु ''मेरी और भी''-२,
आज मुझको भी बाबा पड़ा तुमसे काम, आके हाथों को थाम,
देखो-देखो दयालु ''मेरी और भी''-२ ।। टेर ।।

मैं तो कबसे खड़ा तेरे दर पे प्रभु,
खाली दामन मेरा आज भरदे प्रभु,
तुम तो हारे के साथी कुहाते हो श्याम, तेरा दुनिया में नाम,
देखो-देखो दयालु ''मेरी और भी''-२ ।। १ ।।

दर्द इतने मिले बोलो कैसे सहुँ,
तुही कहदे भला जाके किससे कहुँ,
तुम तो भगतों के मन की सुनते हो श्याम, आँखे पढ़ते हो श्याम,
देखो-देखो दयालु ''मेरी और भी''-२ ।। २ ।।

नाम की लाज रखले तु सुन साँवरे,
एक दुखिया के दुखड़े हर साँवरे,
''हर्ष'' दीनों के दुखड़े हरते हो श्याम, झोली भरते हो श्याम,
देखो-देखो दयालु ''मेरी और भी''-२ ।। ३ ।।

(तर्ज : इन्हीं लोगों ने ले लीन्हा...)

तेरे लाला ने मैया फोड़ी मटकिया मोरी-२ ।। टेर ।।

हमरी ना मानो पणिहारी से पूछो,
इसने कांकरिया से फोड़ी मटकिया मोरी ।।

हमरी ना मानो माँ ग्वालन से पूछो,
इसने छींके पे चढ़ फोड़ी मटकिया मोरी ।।

हमरी ना मानो गुजरियों से पूछो,
''हर्ष'' डगरिया में फोड़ी मटकिया मोरी ।।

(तर्ज : दानी होकर क्युँ चप बैठा...)

दानी तुमसा और ना देखा, ना ऐसा दातारी रे,
ओ श्याम तेरी, लीला है दुनिया से न्यारी रे,
बिन मरजी के हिले ना पत्ता, ऐसी है सरकारी रे,
ओ श्याम तेरी, लीला है दुनिया से न्यारी रे ।। टेर ।।

प्रीत के जल से जिसने सीचाँ, ''उसका बाग खिला है''-२,
पूर्ण समर्पण जो कर बैठा, ''उसको श्याम मिला है''-२,
कली काल में पूज रही है तुमको दुनिया सारी रे ।। १ ।।

क्या करना और क्या करते हैं, ''हमको होश नहीं है''-२,
करम हमारे ही हैं उलटे, ''तुमको दोष नहीं है''-२,
अपने करमो से ये दुनिया दुख संकट में हारी रे ।। २ ।।

हारे हुए को आके सहारा, ''तूने श्याम दिया है''-२,
''हर्ष'' भवँर में अटका बेड़ा ''तूने पार किया है''-२,
बिन पानी के तेरे दम पे चलती नाव हमारी रे ।। ३ ।।

(राग : गजल)

दिल फिसल ही गया आ भी जा साँवरे,
अब मचल ही गया, आ भी जा साँवरे ।। टेर ।।

रात भर तेरा रस्ता निहारा किये-२,
दिन निकल ही गया, आ भी जा साँवरे ।। १ ।।

रैन किर्तन की लगता है, छोटी हुई-२,
चाँद ढल ही गया, आ भी जा साँवरे ।। २ ।।

वो जुदाई का मौसम, उदासी भरा-२,
अब बदल ही गया, आ भी जा साँवरे ।। ३ ।।

लड़खड़ाता रहा, ''हर्ष'' गिरता रहा-२,
अब सम्भल ही गया, आ भी जा साँवरे ।। ४ ।।

(तर्ज : हम सफर मेरे हमसफर...)

दिल में है अरमान बाबा, मैं भी कुछ सेवा करूँ,
बिन दया के तेरी कैसे, ख्वाब ये पूरा करूं ।। टेर ।।

ऐसे भी वंदे है जिनको, धन से तूने भर दिया,
थोड़ी सी दौलत लुटाकर, नाम अपना कर लिया,
नाम हो तो हो तुम्हारा, बस यही कोशिश करूँ ।। १ ।।

देने का मन हो तो कहते, प्रेरणा तेरी हुई,
मन नहीं गर हो तो कहते, प्रेरणा तेरी नहीं,
नाम तेरा वो भुनाते, तुमसे ये कहते डरूँ ।। २ ।।

नाम की शोहरत की तूने, रखी ना कोई कभी,
''हर्ष'' जब ये सोचता हूँ, आती आँखो में नमी,
मुझको भी लायक बनादे, नेकी करके मैं तरूँ ।। ३ ।।

(तर्ज : अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार...)

दुख दर्द अनेको है दाता स्वारथ से भरे संसार में,
हम दर्द सुनाना भूल गये आकर के तेरे दरबार में ।। टेर ।।

आँसु से भरी आँखे देखो बेचैन सी है कुछ पाने को,
हम सर को झुकाना भूल गये आकर के तेरे दरबार में ।। १ ।।

अरमान भरे दिल में बाबा उम्मीद का सागर लहराया,
दामन को फैलाना भूल गये आकर के तेरे दरबार में ।। २ ।।

वो हाथ पकड़ लेता है तु जो करूणा के वश उठता है,
हाथों को उठाना भूल गये आकर के तेरे दरबार में ।। ३ ।।

ऐ ''हर्ष'' मिलाता तु नजरें तेरे प्रेमी से ओ सांवरिये,
नजरें ही उठाना भूल गये आकर के तेरे दरबार में ।। ४ ।।

(तर्ज : तुम हमारे थे प्रभु जी तुम हमारे हो...)

देखा जबसे हे कन्हैया, इस नजारे को,
मैं दिवाना हो गया हूँ, आपका प्रभुवर ।। टेर ।।

तेरी प्रीत में पागल हो गया, ना सोऊँ ना जागुँ,
खोया चैन लौटादे मेरा, मैं तो इतना मागुँ,
अहसां होगा दीवाने पर, आपका प्रभुवर ।।

तेरी चितवन जादूगारी, ओ गोकुल के ग्वाले,
नीले-नीले नैन तुम्हारे, ज्युँ अमृत के प्याले,
आँखों में ये रूप समाया, आपका प्रभुवर ।।

जब भी आँखे बंद करूँ तो, तेरा दर्शन पाऊँ,
भूल के अपनी हस्ती कान्हा, तुझमे ही खो जाऊँ,
दिल ये अब तो हो ही चुका है, आपका प्रभुवर ।।

मेरे प्यारे बाँके छलिया, तू तो छलना जाने,
''हर्ष'' कहे रे तू शम्मा है, हम तेरे परवाने,
मेरा तो कुछ भी ना है सब, आपका प्रभुवर ।।

(तर्ज : तेरा दिल है बड़ा विशाल...)

देखो मेलो भर्‌यो विशाल अजी खाटू मांही,
मेरे सांवरिये के चाल अजी खाटू मांही ।। टेर ।।

भगतां री बाट उडीके, खाटू हालो साँवरो,
बैठ्यो बैठ्यो हेला मारे, बेगा आवो टाबरों,
बाबा को निशान लेके, बेगो सो तु चाल रे,
खाटू में सुणाजे जाके, तेरे दिल को हाल रे,
कर देसी मालामाल-२, अजी खाटू मांही ।। १ ।।
खाटू मांही भगतां री, भीड़ घणी लागी रे,
सोई तकदीर तेरी, देख आज जागी रे,
दीन को दयाल बैठ्यो, दुखड़ा मिटावे जी,
फागण में माल बाबो, मोकलो लुटावे जी,
तु हो जासी खुशहाल-२, अजी खाटू मांही ।। २ ।।
चंग और मजीरा बाजे, नाचे सारा झूम के,
सेवकिया घूमर घाले, देखो घूम-घूम के,
खाटू मांही माची भगतों, फागण की धमाल जी,
झोलियाँ में भगतों भरल्यों, रंग और गुलाल जी,
तु ''हर्ष'' तावलो चाल-२, अजी खाटू मांही ।। ३ ।।

(तर्ज : मुरली वाले छोड़ मेरा पल्ला)

धन से भरदे आज मेरा गल्ला,
मांगता है बाबा तेरा लल्ला ।। टेर ।।

कड़की बड़ी है तुझको बताऊँ,
थोड़ी सी माया बाबा मै चाहुँ,
मेरा भी भरदे तु पल्ला ।। १ ।।

खाता रहा हूँ हरदम मैं फाके,
बेटे पे अब तो किरपा दिखादे,
हँसता है सारा मोहल्ला ।। २ ।।

गाड़ी बंगला कार दिलादे,
नोटो का अम्बार लगादे,
बैठा हूँ बिल्कुल निठल्ला ।। ३ ।।

पैसा हो तो पूछे जमाना,
वरना अपने समझे बेगाना,
''हर्ष'' खड़ा है इकल्ला ।। ४ ।।

(तर्ज : कान्हुड़ा लाल....)

नैणा का बाण मतना मारो साँवरा धणी,
साँवरा धणी जी म्हारे, हिये पे बणी ।। टेर ।।

बांकी लटक थारी, बाकें बिहारी,
नैण कटारी अंईया, खेंच के मारी,
आँख्या सू श्याम चोखी, आँख्या लड़ी ।। १ ।।

जी में तो आवे थाने, नैणा में समा ल्यूँ,
नैणा के रस्ते थाने, हिये में बसा ल्यूँ,
हिवड़े री प्यास बाबा, मोकली बढ़ी ।। २ ।।

जीव जलाणो थारी, बाण पुराणी,
''हर्ष'' भगत थारी, प्रीत पिछाणी,
भगतां पे श्याम थारी, निज़रां पड़ी ।। ३ ।।

(तर्ज : पहली पहली बार छलिये...)

पहली पहली बार छलिये, हुआ है दीदार छलिये,
जीना दुश्वार हो गया, दिल का करार खो गया,
मुझे तुमसे प्यार हो गया ।। टेर ।।

आँखे तेरी नीली नीली बड़ी मस्तानियाँ,
कुरबां है तुझपे कान्हा लाखो जिन्दगानियाँ,
आके तेरे द्वार छलिये, दिल गया हार छलिये,
जीना दुश्वार हो गया, दिल का करार.... ।। १ ।।

सोणा सोणा प्यारा प्यारा तेरा सिणगार है,
दूल्हे सा लागे देखो मेरा सरकार है,
नैनों का वार छलिये - हुआ दिल के पार छलिये,
जीना दुश्वार हो गया, दिल का करार... ।। २ ।।

राधा के संग कान्हा नैनों को सुहाये रे,
''हर्ष'' दिवाने तेरे फूले ना समाये रे,
तुझपे जाँ निसार छलिये- देखुँ बार-बार छलिये,
जीना दुश्वार हो गया, दिल का करार... ।। ३ ।।

(तर्ज : इक बार हमसे सांवरे नजरें मिलाइये...)

फुर्सत मिले तो साँवरे हमको भी देखले,
हम भी खड़े है श्याम तेरी चौखट पे देख ले ।। टेर ।।

दर पे तुम्हारे साँवरे लाखों की भीड़ है,
कैसे दिखाऊँ आपको दिल में क्या पीड़ है,
मुख है मेरा सिला हुआ दिल को ही देख ले ।। १ ।।

उलझन मिटाने में तुम्ही उलझे सदा रहो,
कैसे हमारी मुश्किलें सुलझे जरा कहो,
दूजा ना कोई आसरा इतना तु जानले ।। २ ।।

लाखों उबारे आपने हमको भी तार दो,
तेरी दया की साँवरे अब तो बोछार हो,
तेरा भरोसा ''हर्ष'' को बाबा तु मान ले ।। ३ ।।

(तर्ज : बन जाइये इस दिल के...)

बन जाइये, इस बेटे के घर में, मेहमां बन जाइये,
कर जाइये, इस बेटे पे कान्हा, अहसां कर जाइये ।। टेर ।।

तेरे ही ख्यालोऽऽ में, खोया रहता हूँ,
सपने मैं तेरे, संजोया करता हूँ,
तुझको ये बेटा, पुकारा करता है,
रस्ता ये तेरा, निहारा करता है, करता है-करता है,
बन जाईये इस बेटे.... ।। १ ।।

पढ़ लिया मैंने, वो भीलनी के जाना,
प्रेम से झूठे, वो बेरों का खाना,
याद मुझे है, विदुर की कहानी,
वो नरसी के किस्से, वो मीरा सी दीवानी,दीवानी-दीवानी,
बन जाईये, इस बेटे.... ।। २ ।।

ये मेरी तमन्ना-तू, घर मेरे आये,
प्रेम से परोसा, हाथों से मेरे खाये,
तेरी ही यादो में, मैं आहे भरता हूँ,
''हर्ष'' तुम्हारी, मैं राहे तकता हूँ,तकता हूँ, तकता हूँ,
बन जाइये, इस बेटे.... ।। ३ ।।

(तर्ज : बैठ्यो खाटू में लगाके...)

बणजा करमा जैसो ठाडो तु भी आज,
यो खासी तेरो खीचड़लो ।। टेर ।।

बिदुराणी सो प्रेम दिखाके घर में आज बुलाले,
सबरी बणके चाहे इने जूठा बेर खिलादे,
इने प्रेम से जिमादे भाया आज ।।

बाल सखा सो भाव दिखाजे दौड़यो-दौड़यो आसी,
मित्र सुदामा का ज्युँ खाया तेरा तन्दूल खासी,
इको बणके तु दिखा दे भाया आज ।।

करके भरोसो विष को प्यालो पी गई मीरा बाई,
नरसी ने विश्वास घणो थो हुण्डी यो सिकराई,
ऐं को करले तु भरोसो भाया आज ।।

रुस्योड़ा सेवक ने कान्हो हरदम आन मनायो,
''हर्ष'' कहवे नानी रुसी तो आके-भात भरायो,
इने रुस के दिखादे भाया आज ।।

(तर्ज : बंशी जोर की बजाई रे...)

बनड़ो जोर को लखावे जी खाटूवालो,
खाटूवालो म्हारो लीले वालो ।। टेर ।।

झिलमिल झालरदार बागो बाबा जी के सोवे,
बागो जोर को लहरावे जी खाटूवालो ।।

माथे पर केशर की लाली बाबा जी के सोवे,
टीको जोर को लगावे जी खाटूवालो ।।

हाथां माही मोरछड़ी म्हारे बाबा जी के सोवे,
झाड़ो जोर को लगावे जी खाटूवालो ।।

मोरपाँख की ''हर्ष'' किलंगी मोर मुकुट में सोवे,
पेचों जोर का बंधावे जी खाटूवालो ।।

(तर्ज : मैं ना भूलूंगा....)

बाबा आएगा, बाबा आएगा-२, मन क्यूँ तरसे लीले चढ़के,
खाटू की गलियों से, बाबा आएगा-२ ।। टेर ।।

तेरा दिल क्यूँ टूटा-२, वो धीरज क्यूँ छूटाऽऽऽ,
भगत विश्वास तेरा-२, नहीं बिल्कुल झूठाऽऽऽ,
प्रेम भाव का भूखा है वो, भाव का भोग लगा,
देख के तेरी श्रद्धा बाबा, दौड़ा आएगा ।। बाबा आएगा.... ।।
छोड़ दे चिन्ता तू-२, अरे चिन्तन कर लेऽऽऽ,
श्याम के चरणों में-२, भगत वन्दन करलेऽऽऽ,
श्याम प्रभू की ज्योत जलाके, मन से इसे बुला,
लगन तुम्हारी जो है सच्ची, रूक नहीं पाएगा ।। बाबा आएगा.... ।।
दरश की चाहत हो, मिलन की तड़पन हो,
धणी के स्वागत में, धड़कती धड़कन हो,
भजन दिल से गाओ, मगन मन हो जाओ,
चरण में चित लाओ, इसी में खो जाओ,
तू सर को झुकाऐगा, श्याम गुण गाएगा,
दरस तू पाएगा, श्याम आ जाएगा,
वो देखो श्याम चला, वो लीला नाच उठा,
गगन में धूल उड़ी, तेरी तकदीर खुली,
श्याम धणी का वन्दन करले, चरणों में झुक जा,
''हर्ष'' तेरे विश्वास को बाबा, तोड़ ना पाएगा ।। बाबा आएगा.... ।।

(जन्म दिन)

बार बार दर पे आयें - बार बार हम ये चाहें,
तू रहे हमारे साथ साँवरे है ये आरजु
Happy Birth Day To You-2,
Happy Birth Day To Kanhaiya
Happy Birth Day To You.

आ पुकार हम भगतों की, मानले तु कान्हा-२,
ना जुदा ही अब रह पायें, जानले तु कान्हा,
नहीं-नहीं, तुमसा यहाँ, कोई नहीं है,
हमपे भी नज़र पड़ जाये, तो निहाल हम हो जाये ।। तू रहे ...।।

मेरी भी सुनो मुझको भी, तोहफा आज दे दे-२,
मैं खड़ा तेरी चौखट पे, प्यार थोड़ा दे दे,
सुनले जरा, मुझको भी, तेरी है जरूरत,
आ महर अब हो जाये, हर किसी का मन खिल जाये ।। तू रहे ...।।

बेटों से जनम की बाबा, तु बधाई ले ले-२,
थोड़ी सी जगह चरणों में, ''हर्ष'' को तु दे दे,
छोटा सा ये, करो जरा, अहसान मुझपे,
द्वार पे उमर कट जाये, जीना ये सफल हो जाये।। तू रहे ...।।

(तर्ज : घनश्याम बुलावे...)

बाबो श्याम बुलावे, होली खेलण ने खाटू धाम में ।। टेर ।।

हेलो आयो सांवरे को जी, हो जाओ तैयार,
खाटू माही छाई भगतों, फागणिये की बहार जी ।। १ ।।

कान्हुड़े संग खेलो होली, छिड़को इत्तर फुहार,
रंग अबीर लगाओ जमके, मारो भर पिचकार जी ।। २ ।।

खाटू चालो तावला जी, मेलो भर्‍यो विशाल,
चंग मजीरा सागे लेल्यो, मिलके करो धमाल जी ।। ३ ।।

फागणिये में सेठ सांवरो, भर देसी भण्डार,
''हर्ष'' थे बेगा जाके मांगो, जितणी है दरकार जी ।। ४ ।।

(तर्ज : आवाज देकर हमें तुम...)

बाहें पसारो कन्हैया बचाओ,
कहीं गिर न जाऊँ, जरा तुम उठाओ ।। टेर ।।

मिली ठोकरें जिन्दगी में हमेशा,
सदा हर घड़ी मैं रहा हुँ परेशां,
दया अब जरा सी कन्हैया दिखाओ ।। १ ।।

मैं बरसों से हर हाल में घुट रहा हुँ,
मैं माया के मोह जाल में फंस रहा हुँ,
मेरे दुखड़े आके कन्हैया मिटाओ ।। २ ।।

न थामोगें तुम तो मैं रोता रहूँगा,
तेरा नाम फिर भी मैं लेता रहुँगा,
गले से मुझे भी कन्हैया लगाओ ।। ३ ।।

सदा दीन का साथ तुमने दिया है,
दिवाने से रूसवा बता क्यूँ हुआ है,
मेरी ''हर्ष'' भूलें कन्हैया भुलाओ ।। ४ ।।

(तर्ज : बिन तेरे क्या है जीना....)

बिन तेरे क्या है बाबा-२ ।। टेर ।।

मेरे मन के आँगन में, मेरे दिल की धड़कन में,
मेरी आँखों में तु है, मेरी सांसो में तू है,
बिन तेरे मैं बेकार, ओ साँवलिये सरकार,
तू ही मेरा सब कुछ, मैं तेरा ताबेदार ।।
बिन तेरे क्या है बाबा.... ।। १ ।।

सोते पीते खाते, बस तेरी ही बातें,
तेरे गुण गाऊँ मैं, तुझको ही चाहूँ मैं,
जब भी आँखे मीचूं, बस तुझको ही देखुं,
तेरा बाबा मुझको, रहता है इन्तजार ।।
बिन तेरे क्या है बाबा.... ।। २ ।।

तेरा साथ मिले केवल, कुछ और नहीं चाहत,
तेरे नगमे गाता हूँ, तेरी किरपा चाहता हूँ,
मिलने की तमन्ना भी, हर वक्त मैं रखता हूँ,
दर्शन तेरा ''हर्ष'' मांगे, लीले के असवार ।।
बिन तेरे क्या है बाबा.... ।। ३ ।।

(तर्ज : आओ सुनाऊँ प्यार की...)

भटक रहा था, अब तक मैं दिवाना,
श्याम भजन की मस्ती से अनजाना,
अब तो लिखने लगा हूँ, अब तो गाने लगा हूँ,
श्याम भजनों में सबको, मैं नचाने लगा हूँ ।। टेर ।।

कभी सोचा न था, होगी इतनी दया,
श्याम खाता हूँ मैं, अब तो तेरा दिया,
तेरी सेवा मिली, मुझपे किरपा हुई,
तेरी रहमत की बेटे पे, बरखा हुई, देखो बरखा हुई,
ऐसा मुझमें क्या देखा क्या जाना, भटक रहा था.... ।। १ ।।
कोई साथी न था, कोई संगी नहीं,
मैंने देखी है श्याम, घर में तंगी बड़ी,
तूने ये क्या किया, मेरे दिन फिर गये,
जो थे मुरझा गये, फूल वो खिल गये-२,
मान मुझे अब देने लगा जमाना, भटक रहा था.... ।। २ ।।
अरजी तुमसे यही, साथ तेरा रहे,
मेरे सिर पे सदा, हाथ तेरा रहे,
मैं तेरे गीत युँ, हरदम गाता रहुँ,
श्याम किरपा तेरी, ''हर्ष'' पाता रहुँ-२,
दिल से अपने मुझको ना बिसराना, भटक रहा था.... ।। ३ ।।

(तर्ज : अटक्योड़ी नाव पार...)

भगतां रा दुखड़ा मिटायां सरसी,
दीन का दयाल थाने आणो पड़सी ।। टेर ।।

कदसुं बुलाऊँ कइयां कोनी आवो,
बिगड़ी थे म्हारी बाबा जी बणाओ,
थे ना सुणो तो म्हारी कुण सुणसी ।। १ ।।

बेगा सा थे आओ करल्यो सुणाई,
धीर छुट्यो जावे और ना समाई,
दुखिया को साथ निभाणो पड़सी ।। २ ।।

''हर्ष'' दयालु निजरां उठाओ,
हाथ दया को सिरपे फिराओ,
भगतां रा काम बणाया सरसी ।। ३ ।।

(तर्ज : तेरी पार करेगा नैया)

भव पार करेगा भैया, भज मन किशन कन्हैया,
पावन करले मन का कोना, बृज मण्डल का श्याम सलोना,
पार करे तेरी नईया, भज मन किशन कन्हैया ।। टेर ।।

गोवर्धन को नख पे उठाया,
इन्द्रदेव का कोप मिटाया,
गोकुल का रखवैया, भज मन किशन कन्हैया ।। १ ।।

भई अकेली अबला नारी,
दुश्शासन ने की मक्कारी,
आया चीर बढ़ैया, भज मन किशन कन्हैया ।। २ ।।

चली डूबने नानी बाई,
आया बनके धर्म का भाई,
मुरली मधुर बजैया, भज मन किशन कन्हैया ।। ३ ।।

''हर्ष'' कहीं पर रास रचावे,
कहीं लूट दही माखन खावे,
वन-वन धेनु चरैया, भज मन किशन कन्हैया ।। ४ ।।

(तर्जः मेहन्दी रची थारे हाथां में....)

मकराणे को मंदरियो-२, जँच कर बैठ्यो सांवरियो,
म्हारे लीले को असवार बाबो श्याम धणी ।। टेर ।।

खाटू का सरदार थारी भोत घणी सकलाई जी,
टाबरिया ने लागे थारो रूप घणो सुखदाई जी,
मोर मुकुट सिर सोवे है-२, मोर पाँख मन मोवे है,
थारो बागो घेर घुमेर बाबा श्याम धणी ।। १ ।।
साचाँ-साचाँ परचा देवो ऊँची है ठकुराई जी,
ऊँचे आसण आप विराजो बाबा श्याम कन्हाई जी,
मोर छड़ी थारे हाथां में-२, केशर टीको माथे पे,
थारे गल मोतियन को हार बाबा श्याम धणी ।। २ ।।
लाखां ही भगतां की थे तो मन की आस पुराई जी,
घर-घर मांही पूजे बाबा थाने लोग लुगाई जी,
काजल सोवे आख्याँ में-२, कुण्डल सोवे कानां में,
थारो साँचो है दरबार बाबा श्याम धणी ।। ३ ।।
जादूगारी चितवन थारी भगतां के मन भाई जी,
निज भगतां की सेठ सांवरा थे ही करो सुणाई जी,
''हर्ष'' थारी लीला न्यारी-२, देव दयालु दातारी,
थे कलयुग का अवतार बाबा श्याम धणी ।। ४ ।।

(तर्ज : आये हैं दिन फागण के...)

म्हाने तो इब नाचण दे-म्हाने तो इब नाचण दे,
श्याम धणी के कीर्तन मांही-इब तो धूम मचावण दे ।।

सज्यो है सिणगार बड़ो ही निरालो,
यो सजकर बैठ्यो है खाटू वालो,
रूक ना पाऊँ रोके मतना-ठुमका आज लगावण दे ।। १ ।।

पगां मे म्हारे घुघंरू आज बंधादे,
धणी के आगे म्हाने आज नचादे,
बांध घूघरा श्याम धणी ने- म्हाने आज रिझावण दे ।। २ ।।

चालो जी सब मिलके घूमर घालो,
सुरीला कोई ढप्पली चंग बजाल्यो,
भजन श्याम का मीठा-मीठा - म्हाने आज सुणावण दे ।। ३ ।।

सलूणो लागे देखो श्याम बिहारी,
मारुगाँ मैं तो केशर भर पिचकारी,
''हर्ष'' कह्वे इत्तर की खुशबु - म्हाने आज उड़ावण दे ।।४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : कोई तुम सा नहीं...)

मीठी मुस्काने अधर पे-२, तीर चलते है नज़र के,
जादू कर डाला जिगर पे ऽऽऽ कोई तुमसा नहीं-२ ।।

जब से देखा है तुम्हें हम, हो गये तुझपे फिदा-२,
भा गई दिल को हमारे, ''श्याम तेरी हर अदा-२,
रूप तेरा है सजीला-३ देव तु जग में हठीला,
सांवरा छलिया है रंगीलाऽऽऽ, कोई तुमसा नहीं.... ।। १ ।।

गालो पे गेसु की लटकन, सांवली रंगत तेरी-२,
हर घड़ी तुझको ही देखु, बढ़ गई चाहत मेरी-२,
मदभरी खुशबु बदन से -३ फूल महके ज्युँ चमन में,
हो गये घायल कसम सेऽऽऽ, कोई तुमसा नहीं.... ।। २ ।।

काली घुंघराली सी जुल्फें, जैसे सावन की घटा-२,
दिल लुभाया हर अदा ने, ''हर्ष'' तुझपे मर मिटा-२,
मैं दिवाना हो गया हूँ-३, तुझमें ही मैं खो गया हूँ,
अब तो तेरा हो गया हूँऽऽऽ, कोई तुमसा नहीं.... ।। ३ ।।

(तर्ज : तेरा दिल है बड़ा विशाल...)

मेरा दिल है बड़ा उदास, ओ खाटू वाले,
मेरी पूरी करदे आस, ओ खाटू वाले ।। टेर ।।

तेरे ही भरोसे मैंने, बीड़ा ये उठाया है,
अपना तुम्ही को माना, जग तो पराया है,
दूसरा नहीं है कोई, काम जो सम्भाले रे,
नाते रिश्तेदार तो बस, गलतियां निकाले रे,
मैं बिल्कुल हुआ निराश-२, ओ खाटू वाले ।। १ ।।

सोचता हूं कैसे इतने, काम कर पाऊँगा,
रीति और रिवाज बाबा, कैसे मैं निभाऊँगा,
अर्थ के बिना ये बेटा, कितना असमर्थ है,
निर्बल के दिल में बाबा, जाने कितना दर्द है,
मुश्किल में है ये दास, ओ खाटू वाले ।। २ ।।

जान ले तु दास की अब, लाज तेरे हाथ है,
गर्दन ना झुकने पाये, ये ही अरदास है,
कैसे करोगे बाबा, ये तो तुही जानता,
लेकिन करेगा तूही, ''हर्ष'' तेरा मानता,
मुझे पूरा है विश्वास, ओ खाटू वाले ।। ३ ।।

(राग रचयिता : विकास कपूर)

मेरा साँवरा, साँवरा, मेरा साँवरा...
हारे का है साथी कौन,
बन्दे अपने मुख से बोल ? मेरा साँवरा...
अपने शीश का दानी कौन,
बन्दे अपने मुख से बोल ? मेरा साँवरा... ।। टेर ।।

बड़ा ही दयालु, बड़ा ही निराला,
दीनो का है कौन, यहाँ रखवाला, मेरा साँवरा...
कलयुग का अवतारी कौन, बन्दे अपने मुख से बोल? मेरा साँवरा...
दीनों का दातारी कौन, बन्दे अपने मुख से बोल? मेरा साँवरा... ।। १ ।।

जमाने से हारा जो किस्मत का मारा,
दिया उसको किसने, बताओ सहारा, मेरा सावरा...
तीन बाण का धारी कौन, बन्दे अपने मुख से बोल? मेरा साँवरा...
माँ का आज्ञाकारी कौन, बन्दे अपने मुख से बोल? मेरा साँवरा... ।। २ ।।

माँगे बिना ही कौन, भरता खजाने,
''हर्ष'' जरा तुम बूझो तो जाने मेरा साँवरा...
लीले का असवारी कौन बन्दे अपने मुख से बोल? मेरा साँवरा...
जग में लखदातारी कौन, बन्दे अपने मुख से बोल? मेरा साँवरा... ।। ३ ।।

(तर्ज : जब से देखा तुम्हें..)

मेरी किस्मत का भगतो क्या कहना, सांवरा देखो घर मेरे आया,
गंगाजल की जगह आँसुओं से, इनके चरणों को मैंने धुलाया ।।

सोने चान्दी का ना था सिंहासन, जिसपे देता कन्हैया को आसन,
काठ की चौकी थी घर में मेरे, उसपे बाबा को मैंने बिठाया ।।

ना ही मेवे थे ना मिसरी माखन, डेढ़ मुट्ठी था घर मेरे राशन,
रूखा सूखा मैं जैसा भी खाऊँ, मेरे बाबा को मैंने खिलाया ।।

ना चंवर हीरे मोती जड़ी थी, हाथ पंखी भी टूटी पड़ी थी,
होले होले बड़े ही जतन से, मैंने बाबा को पंखा डुलाया ।।

''हर्ष'' सोने चला जब सलोना, इसके लायक नहीं था बिछौना,
चरमराई सी थी एक खटिया, उसपे बाबा को मैंने सुलाया ।।

(तर्ज : सानु खाली ना दुवारे...) (मास्टर सलीम)

मेरी थाम के कलाई तू ना छोड़ साँवरे आया
तेरे ही भरोसे जग छोड़ साँवरे, तु मुझको देना ना छोड़
श्यामSSS देना ना छोड़ ।। टेर ।।

नज़रें उठाके जरा, बेटे को निहार ले,
बिगड़े नसीबा मेरे, सांवरे संवार दे,
खाली हाथ मुझको, देना ना तूं मोड़ सावरे,
आया तेरे ही.... ।। १ ।।

सुन भी ले खाटूवाले, मेरी अरदास तू,
दीन को शरण देना, चरणों के पास तू,
नाता प्रीत का तू, लेना ज़रा जोड़ साँवरे,
आया तेरे ही.... ।। २ ।।

सच्चा दरबार तेरा, सच्चा इन्साफ है,
भगतों की भूल बाबा, करता तू माफ है,
आशा ''हर्ष'' की तू, देना नहीं तोड़ साँवरे,
आया तेरे ही.... ।। ३ ।।

(राग रचयिता - विकास कपूर - ९८३०२१०४३७)

मेरे कानों में मुरली की तान बस गई, ''कुछ भाये नहीं ''-२,
तेरी मुरली में, अब मेरी जान बस गई, ''कुछ भाये नहीं''-२ ।।

ऐसे काहे तु बंशी बजाये-२,
मेरी आँखों से निंदिया चुराये-२,
तेरे झांसे में-२, जुल्मी मैं आज फँस गई,
कुछ भाये नहीं... ।। १ ।।

काहे छेड़े तू ऐसा तराना-२,
कब छोड़ोंगे बंशी बजाना-२,
करते-करते-२, अरज ये जुबान घिस गई,
कुछ भाये नहीं... ।। २ ।।

''हर्ष'' तू है जो बिल्कुल ना माने-२,
मेरे घर वाले देते है ताने-२,
दो पाटन के -२, बीच में आज पिस गई,
कुछ भाये नहीं... ।। ३ ।।

(तर्ज : तेरी जय हो गणेश....)(सलीम)

मेरे खाटू नरेश-२, मेरे काटो कलेश-२ ।। टेर ।।

हारे को सहारा तूने श्याम दिया है,
मैंने भी तो बाबा तेरा नाम लिया है,
मेरे दुखड़ो को कर तु शेष ।। १ ।।

कितनों की बाबा तूने बिगड़ी बनाई,
मेरी भी आजा करले सुनाई,
कर मुझपे भी किरपा विशेष ।। २ ।।

नाम की तेरे खड़ताल बजाऊँ
जित जित देखु उत तुमको ही पाऊँ,
मैंने धरा जोगिया भेष ।। ३ ।।

इतनी महर मुझपर हो जाये,
''हर्ष'' दिवाना बस इतना ही चाहे,
रहुँ चरणों में तेरे हमेश ।। ४ ।।

(तर्ज : मेरे हाथ में तेरा हाथ हो...)

मेरे सिर पे तेरा हाथ हो श्याम परिवार मेरे साथ हो,
तेरी सांवरे किरपा है अगर- ना कोई चिन्ता ना कोई फिकर ।।

मेरे होठों पे, होगा हर घड़ी, तेरा नाम ओ मेरे दाता,
तेरे गुण गाऊँ, हरपल मैं चाहुँ, तेरा साथ यूँ ही विधाता ।।

हो जाये ऐसा, डरना फिर कैसा, चाहे चले कितनी ही आँधी,
किरपा से तेरी - ओ मेरे बाबा, भगतों की तेरे है चान्दी ।।

''हर्ष'' ना दूजा, मैंने तो देखा, ऐसा है परिवार कहाँ,
रहना मैं चाहूँ , तेरे बेटो के, चरणों में झुक के सदा ।।

(तर्ज : भरदे मेरे पल्ले...)

मैया तेरा लल्ला करे है मोसे छेड़खानी,
राहों में माँ हमें सताये, जमना तट पे चीर चुराये,
करता ये मनमानी - करे है मोसे छेड़खानी ।। टेर ।।

पनघट पे मैं जाऊँ तो माँ, ''पीछे-पीछे आये रे''-२,
खेंच के मेरी चोटी मैया, ''गगरी ये छलकाये रे''-२,
इतने पर पीछा ना छोड़े, कंकर मार मटकिया फोड़े,
करता ये नादानी - करे है मोसे छेड़खानी ।। १ ।।

गहरी नीन्द में जब मैं सोऊँ, ''ग्वालों के संग ये आये''-२,
छीकें पे चढ़के मटकी का, ''चोरी से माखन खाये''-२,
खुद खाये ग्वालों को खिलाये, थोड़ा सा घर में बिखराये,
करता ये शैतानी - करे है मोसे छेड़खानी ।। २ ।।

कान पकड़के इसके मैया, ''थोड़ा सा समझा ले माँ''-२,
''हर्ष'' अगर ये ना माने तो, ''रस्सी बाँध बिठाले माँ''-२,
पैरों में बेड़ी लगवा दे, उखल से इसको बंधवा दे,
याद आ जाये नानी - करे है मोसे छेड़खानी ।। ३ ।।

(तर्ज : तु गंगा की मौज मैं....)

युं बंशी की तान ना छेड़ो मुरारी,
लो हुई रे मगन तेरी राधा, होSSS,
तेरी राधा बेचारी हुई रे मगन, तेरी राधा बेचारी ।। टेर ।।

चला तेरी गुजरी पे ''जादू सा तेरा''-२,
लगा जैसे चन्दा को ''बदली ने घेरा''-२,
तेरी बाँसुरी ने जो छेड़ा तराना-२,
तेरी राधिका का ''हुआ दिल दिवाना''-२,
तेरी तानों ने-२, किया तेरी तानों ने बेबस बिहारी ।। १ ।।

जमुना की लहरें ये ''धुन गुनगुनाये''-२,
कदम की लतायें ज्युँ ''सरगम सुनाये''-२,
खनकने लगी देखो ''पायल दिवानी''-२,
थिरकने लगी है तेरे ''दिल की रानी''-२,
जिया पे चले-२, जिया पे चले जैसे कोई कटारी ।। २ ।।

अगर तु है दीपक तो ''राधा है बाती''-२,
तेरे खातिर कान्हा वो ''खुद को जलाती''-२,
अरे तेरी जनमों की ''जोगन है राधा''-२,
कहे ''हर्ष'' राधा बिन ''तु तो है आधा''-२,
सलामत रहे-२, सलामत रहे जोड़ी दोनों की प्यारी ।। ३ ।।

(तर्ज : दरबार अनोखा...)

ये देव रंगीला, सरकार निराला,
लीले वाले का, अंदाज निराला ।। टेर ।।

जो बंद हो किस्मत, खाटू आ जाओ,
तकदीर की चाबी, इनसे पा जाओ,
हर गिरते हुए को, इसने ही सम्भाला ।। १ ।।

ये हाथ जो पकड़े, वो हाथ न छोड़े,
जीवन भर उसका, ये साथ न छोड़े,
बस दीन दुःखी का, ये है रखवाला ।। २ ।।

ये बिन बोले ही, आँखे पढ़ लेता,
अपने सेवक के, दुखड़े हर लेता,
ऐ ''हर्ष'' ना दूजा, ऐसा दिल वाला ।। ३ ।।

(तर्ज : आमे तो कावड़ी वाला...)

रंगीला फागुन आया रे, बुलाये बंसरी वाला,
चालो रे खाटू चालो रे, बुलाये बंसरी वाला,
भगतो आया फागुन मेला, लीले वाला मारे हेला,
झूमे नाचे सारी दुनियां, बुलाये बंसरी वाला ।। टेर ।।

बुलावा तेरा आया, श्याम के मन तु भाया,
रंगीला प्यारा प्यारा, श्याम का मेला आया,
ध्वजा हाथों में लेके, चले बाबा के बेटे,
चले है पैदल कोई, चले कोई लेटे-लेटे ।। रंगीला ... ।। १ ।।

उड़े है रंग रंगीले, बजे है चंग सुरीले,
झूम के नाचे गाये, दिवाने आज हठीले,
कोई सरपट सा चाले, कहीं कोई घूमर घाले,
श्याम की मस्ती में वो, मगन होके मतवाले ।। रंगीला ... ।। २ ।।

भरा मेला अनोखा, बड़ा ही पावन मौका,
श्याम के दर पे चालो, नहीं रह जाये धोखा,
कहे ये ''हर्ष'' प्यारे, तेरे हो वारे-न्यारे,
श्याम की किरपा होगी, भरे तेरे भण्डारे ।। रंगीला ... ।। ३ ।।

(तर्ज : दिल ये मेरा साँवरे...)

राधे तेरे श्याम ने क्या जादू कर दिया,
मोहिनी अदाओं ने दिवाना कर दिया,
मोहे वश में सांवरिये ने, तेरे सांवरिये ने,
आज कर लिया ।। टेर ।।

मुख मण्डल की आभा न्यारी, बांकी अदा पे मैं बलिहारी,
सुन्दर सा ये रूप सलोना, वश में मनवा क्युंकर हो ना ।
मोहे वश में... ।। १ ।।

अधरन पर मीठी मुस्काने, दास लगे हैं होश भुलाने,
भोली भाली चित्तवन प्यारी, आँखे मानो तीखी कटारी ।
मोहे वश में... ।। २ ।।

''हर्ष'' जो देखा मन हरषाया, डूबके तुझमें क्या नहीं पाया,
रूप का अमृत पान किया है, इक पल में सौ साल जिया है ।
मोहे वश में... ।। ३ ।।

(तर्ज : धमाल) (रूकमणि विवाह)

रूकमण कान्हुड़े संग फेरा लेवे मन हर्षावे रे,
वरमाला को हार गले में आज पिरावे रे ।। टेर ।।

लिक्ष्मी रूपा रूकमण कान्हो, नारायण अवतारी रे,
आज द्वारिका माही दोन्यु, ब्याह रचावे रे ।।

जीवन साथी बणग्या दोन्यु अग्नि देवे साखी रे,
मन्तर बाँचे जोशी जी और सुगन मनावे रे ।।

अँजली भर कर भाई रूकमी अँजला आज भरावे रे,
मात-पिता रूकमण का कन्या-दान करावे रे ।।

पहल्याँ थी या राजकुमारी, आज बणी पटराणी रे,
गठजोड़े की घड़ी सुहाणी आज सुहावे रे ।।

''हर्ष'' भागवत माही जो कोई ब्याह को भजन सुणावे रे,
ऊँके घर में भी कन्या को ब्याह मण्ड जावे रे ।।

(भोग)

(तर्ज : छम छम नाचे देखो....)

रूच रूच जीमो म्हारा साँवरा बिहारी,
प्रेम सुं भगत ल्याया, चूरमे की थाली ।। टेर ।।

आज म्हे थांसु, अरज लगाई,
आओ बाबा श्यामजी, करल्यो सुणाई,
बेगा सा पधारो-२, बाबा सुणल्यो थे म्हारी ।।
रूच रूच जीमो.... ।। १ ।।

आओ घणे चाव सुं, थाने म्हें जिमावाँगा,
आरती उतारां और, चंवर ढुलावाँगा,
किरपा दिखाओ-२, बाबा सुध लेल्यो म्हारी ।।
रूच रूच जीमो.... ।। २ ।।

''हर्ष'' कहवे म्हारो, मान बढ़ाओ,
जीमो-जीमो साँवरा थे, भोग लगाओ,
लीले चढ़ आओ-२, बाबा अरजी है म्हारी ।।
रूच रूच जीमो.... ।। ३ ।।

(धुन बनाईये)

लाखो लाखो पापी तर गये मुझको तारो तो जानु,
दीन दुःखी के तुम हो साथी कान्हा तुमको मैं मानु,
आजा रे कान्हा, आजा रे आ ।। टेर ।।

सर पे लादे पाप की गठरी तेरे द्वारे आया हूँ,
जीवन भर का लेखा जोखा आज बांध के लाया हूँ,
कहने की है बात मगर जब होगा असर तभी जानुँ ।।
आजा रे कान्हा.... ।। १ ।।

सुनता हुँ सरकार आपसा ना कोई दूजा दानी,
किरपा मैं भी पाके रहुँगा मन ही मन मैंने ठानी,
मेरे भी दुख दूर करो तो दुःख भंजन तुमको मानुँ ।।
आजा रे कान्हा.... ।। २ ।।

पूरी करदे आस भगत की बड़ी उम्मीदें लाया हूँ,
''हर्ष'' खड़ा अरदास लगाये गम का बड़ा सताया हूँ,
तेरे रहते खाक भला फिर दर दर की मैं क्युँ छानुँ ।।
आजा रे कान्हा.... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : लेके पहला पहला प्यार...)

ले ले सांवरिये का नाम तेरे बन जायेगें काम,
सारे दुखड़े मिटायेगा मेरा बाबा श्याम ।। टेर ।।

हारे का सहारा है ये, बड़ा दिलदार है,
कलयुग का देवता है, लीले का सवार है,
नाहीं कौड़ी लगे छिदाम, भजले प्यारे सुबहो शाम ।।

मन से बुलाके देखो, पल में ये आयेगा,
अपने भगत की आके, बिगड़ी बनायेगा,
तेरे मिटेगें कष्ट तमाम, तुझको मिल जाये आराम ।।

रूतबा धणी का ''हर्ष'' बड़ा ही कमाल है,
निर्बल का साथी है ये, दीन का दयाल है,
सारा कलयुग इसके नाम, बैठा डटके खाटू धाम ।।

(तर्ज : जे हम तुम चोरी से...)

लो फागुन आया रे, मस्तियाँ लाया रे,
नाचो दिवानो झूम के, अरे ये मेला है श्याम का ।।

खाटू में बाबा के, भगतों की भीड़ समाई,
श्याम ध्वजा ले नाचे, हाथों में लोग लुगाई,
डंका आज, बज रहा, बज रहा, चहुँ ओर श्याम का ।। १ ।।

मंदिर में सज करके, बैठा है लखदातारी,
रंग अबीर उड़ाओ, और मारो भर पिचकारी,
रंग दो रे, प्रेम से, प्रेम से, दरबार श्याम का ।। २ ।।

खूब धमाल मचेगी, अजी खाटू नगरी चालो,
बाबा की चौखट पे, जाकर के घूमर घालो,
बोलो रे, जोर से, जोर से, जैकारा श्याम का ।। ३ ।।

एक बरस के पीछे, फागुन का मेला आया,
''हर्ष'' कहे बाबा ने, खाटू में आज बुलाया,
पाओगे, जान लो, जान लो, तुम प्यार श्याम का ।। ४ ।।

(राग रचयिता : विकास कपूर)

लोग कहते हैं, कि जग में चान्द है, ''सबसे हंसी''-२,
मैं ये कहता हूँ साँवरेSSS आपके जैसा नहीं ।। टेर ।।

देखने को तरसे तुझे चान्द तारे,
बड़े प्यारे लगते हैं ''तेरे नजारे''-२ ।। १ ।।

सांवली सलोनी चितवन तुम्हारी,
निदिंया चुराती ये ''कान्हा हमारी''-२ ।। २ ।।

तुझे देखले जो वो खुद को भुलादे,
तेरा रूप सबको ''दिवाना बनादे''-२ ।। ३ ।।

आँखे ये ''हर्ष'' तेरी अमृत की प्याली,
अधरों पे सोहे तेरे ''प्यारी सी लाली''-२ ।। ४ ।।

(तर्ज : साजन-साजन प्यार की लड़ाई में...)

वाह वाह वाह वाह, प्यारा सा नजारा है,
सांवरे को किसने ''संवारा है''-३ ।। टेर ।।

फूलों से लिपटा कान्हा, मन्द मन्द सा मुस्काये,
एक झलक जो देखे वो, इसका प्रेमी बन जाये-२,
देखो अजी देखोऽऽ, करे क्या इशारा है,
लगता है आँखो से पुकारा है -३ ।। १ ।।

रहे सलामत हाथ सदा, जिसने तुझे सजाया है,
यूं लगता है धरती पर, चान्द उतर ही आया है-२
सोणा अजी सोणा, रूप ये तुम्हारा है,
भगतों को कनखी से निहारा है ।। २ ।।

''हर्ष'' ना ऐसे सजा करो, नजर कही लग जायेगी,
तेरा क्या हम भगतों के, जियरा पे बन आयेगी-२,
होले अजी होले, हंसना तुम्हारा है,
तिरछी अदाओं ने हमें मारा है-३ ।। ३ ।।

(तर्ज : गणपती बप्पा मोरिया...) (सलीम)

वृंदावन हो या मधुबन हो, अन्तर्मन को खोलिये,
राधे-राधे बोलिये-२, ।। टेर ।।

ठाकुर कन्हैया तो राधा ठकुरानी,
सारे जगत की है महारानी,
श्रद्धा से सारे-मुख में प्यारे,
थोड़ी मिसरी घोलिये ।। १ ।।

कान्हा को ध्याये देखो सारा जमाना,
लेकिन राधा का मेरा कान्हा दिवाना,
चरणों में आओ - सर को झुकाओ,
मस्ती में फिर डोलिये ।। २ ।।

डाली-डाली पे राधा नाम लिखा है,
पत्ते-पत्ते पे राधे श्याम लिखा है,
खिल गई ज्योति-नाम के मोती,
दिल में ''हर्ष'' पिरो लिये ।। ३ ।।

(तर्ज : देता हरदम साँवरे...)

सजधज कर के बैठे हो, साँवलिये सरकार,
मोती कुन्दन और कौड़ी से सजा तेरा श्रृंगार ।। टेर ।।

मोतीयों से श्याम का गजरा बनाया है,
कुन्दन कौड़ी गूथ के तुझे खूब सजाया है,
भांत-भांत के फूलों से, महक रहा दरबार ।
सजधज कर बैठे.... ।। १ ।।

श्याम जी के साथ में, दो मोर बैठे है,
भगतों तुम भी नाच लो, ये हमसे कहते है,
आज रिझायेंगे तुझे, खाटू के सरदार ।
सजधज कर बैठे.... ।। २ ।।

''हर्ष'' मेरे श्याम की झांकी निराली है,
लग रहा यूं जग में मानों आज दिवाली है,
श्याम धणी के उत्सव में, भगतों की भरमार ।
सजधज कर बैठे.... ।। ३ ।।

(तर्ज : अपने पिया की मै तो....)

साथी बणैगो म्हारो, खाटूवालो धणियो,
भगतां की गाड़ी को यो हांकणियो -२ ।। टेर ।।

प्रेम का पकवान म्हारे, साँवरे ने भावे जी,
प्रेमीयाँ के घर में यो, छिलका चबावे जी,
करमा को खीचड़ यो ही-२, खावणियो, म्हारो खाटूवालो.. ।। १ ।।

गज ने उवार्‌यो आके, जान बचाई थी,
हाथां ने पसार इने, द्रौपदी बुलाई थी,
साड़ी को चीर यो-२, बढ़ावणियो, म्हारो खाटूवालो.... ।। २ ।।

श्याम बहादुर ऐंको, ध्यान लगायो थो,
मोर छड़ी सूं झट, तालो खुलवायो थो,
भगतां की लाज यो-२, बचावणियो, म्हारो खाटूवालो.. ।। ३ ।।

''हर्ष'' बुलाले मन सूं, दौड़्यो - दौड़्यो आवेगो,
प्रेम सूं यो हाथ थारे सिर पे फिरावैगो,
भगतां की पत यो ही -२, राखणियो, म्हारो खाटूवावालो.. ।। ४ ।।

(राग रचयिता- प्रवीण बेदी फोन न॰ २६६५२०२९)

दोहा - रोता हूँ जार-जार कुछ असर ही नहीं है ।
लगता है दीनानाथ को मेरी फिकर ही नहीं है ।।

सरकार मेरे हाथ को अब थाम लीजिये,
मजबूर हूँ प्रभू बड़ा अब ध्यान दीजिये ।। टेर ।।

कर ना सको जो साँवरे, माँगा नहीं है वो,
सहने ना पाऊँ मैं जिसे, ''लागा है घाव वो''-२
अपनी दया का अब मुझे-२, कुछ दान दीजिये ।। १ ।।
लगता है मेरी बात का, कुछ भी असर नहीं,
बेटे की श्याम क्या तुझे, ''कुछ भी फिकर नहीं''-२
हालात हैं बुरे प्रभु-२, ये जान लीजिये ।। २ ।।
सोचा बहुत कि आपको, परेशान ना करूं,
अब आप ही कहें प्रभु, ''करूँ तो क्या करूँ''-२
इस दास का कहा प्रभु-२, अब मान लीजिये ।। ३ ।।
हमने सुना है दीन पे, करते हो तुम दया,
कहने में तुमको साँवरे, ''आती नहीं हया''-२
तेरे ''हर्ष'' का रुका हुआ -२, हर काम कीजिये ।। ४ ।।

(तर्ज : दिल है कि मानता नहीं...)

सांवरेSS क्यूँ मानता नहीं,
दुखड़े बड़े है, जीवन में बाबाSS,
तू जानता ही नहीं, होSSS,
सावरे क्यूँ माSSनता नहीं ।। टेर ।।

कैसे दिखाऊं, तुझको कन्हैया, दिल में है जख्म हजार,
बिना ही बताए, बस तू समझले, करना तुम्हें उपचार,
जल्दी से आजा, दुखड़े मिटाजा, सुनले मेरे सांवरे ऽऽऽ ।।१ ।।

निष्ठुर बनो ना, इतने दयालू, अब जरा महर करो,
जख्मों को मेरे, हाथों से अपने, अब जरा आके भरो,
सहने ना पाऊं, रो-रो बुलाऊँ, सुनले मेरे सांवरे ऽऽऽ ।। २ ।।

मुझ जैसे पापी, कितने ही बाबा, तारें हैं तुमने यहाँ,
''हर्ष'' खड़ा है, चौखट पे तेरी, बैठे हो छुपके कहाँ,
किरपा जो पाऊँ, मैं भी तर जाऊँ, सुनले मेरे सांवरे ऽऽऽ ।।३ ।।

(राग : भैरवी)

सांवलिये को पेचो रंगवादे,
श्याम श्याम बोल श्री राधे राधे ।। टेर ।।

रंग रंगीलो लागे कान्हों ''ऐसो रंग चढ़ादे''-२,
मोर पाँख की बणा किलंगी ''पेचे मांही सजादे''-२,
कान्हुड़े की-२, पाग बणवादे, श्याम-श्याम बोल....।। १ ।।

घणे चाव सुं कान्हुड़े ने ''चालो आज उढ़ावाँ''-२,
साँवरिये के मन्दरिये में, ''जाके धूम मचावाँ''-२,
पगल्याँ मांही-२, घूघरा बंधवा दे,श्याम-श्याम बोल... ।। २ ।।

बाँध पागड़ी बैठ्यों कान्हो ''राधे राणी सागे''-२,
इन्द्रधनुष भी पेचे स्यामी ''फीको फीको लागे''-२,
कालो टीको-२, दोन्या के लगवा दे, श्याम-श्याम बोल.. ।। ३ ।।

''हर्ष'' दिवानो थाने निरखे ''वारी वारी जावे''-२,
युगल छवि के चरणां मांही ''याही अर्ज लगावे''-२,
चरणां मांही-२ चाकरी लगवा दे, श्याम-श्याम बोल... ।। ४ ।।

(तर्ज : कन्हैया ले चल परली पार...)

सुनादे मीठी-मीठी तान, सुनादे मीठी-मीठी तान,
श्याम सलोने हम भगतों पर होगा रे अहसान ।। टेर ।।

सरगम का जादू बिखरादे,
सोये अरमां आज जगादे,
हम सबको मदहोश बनादे,
धुन मुरली की सुनने खातिर, तरस रहे हैं कान ।। १ ।।

इस मुरली के चरचे भारी,
गोकुल में करते नर नारी,
आज लबों पर तूने धारी,
वृन्दावन का पत्ता-पत्ता, गाये रे गुणगान ।। २ ।।

एक गूजरी एक कन्हैया,
रास रचाये रास रचैया,
थिरक रहे सब ता ता थैया,
''हर्ष'' मेरे मधुबन में आजा, बनके तु मेहमान ।। ३ ।।

(तर्ज : परदेशियाSSS चली रे चली रे...)

सुन सांवरे SSS, तेरे ही भरोसे मेरी नाव रे,
थक से गये हैं तेरे, बेटे के पाँव रे ।। टेर ।।

भटक गया हूँ बाबा, सूझे ना किनारा,
तुझको पुकारे इक, किस्मत का मारा,
मुझपे करो हे दानी, करुणा की छाँव रे ।।

कैसे सम्भालु नैया, हिचकोले खाये,
काँपे है हाथ मेरे, पैर लड़खड़ाये,
नदिया का देख कितना, तेज है बहाव रे ।।

दीन के दयाल आजा, मुझको सम्भाल रे,
बीच भँवर से मेरी, कश्ति को निकाल रे,
''हर्ष'' नहीं तो ताने, देगा सारा गाँव रे ।।

(तर्ज : फिल्म -विवाह)

सूर्य देव की किरणे अलौकिक, नीले गगन पे छाय रही है,
भोर भयो है नन्द की रानी, लाला तुझको जगाय रही है,
जागो जरा ऐ मुरली वाले-२, गऊऐं खड़ी रम्भाय रही है,
गंगाजल से स्नान करो तुम, मैया कबसे बुलाय रही है -२ ।।

जागो जागो तुझको जगाऊँ, लाड लडाऊँगी मोहन मेरे,
स्नान कराऊँगी वस्त्र उढ़ाऊँगी, भोग लगाऊँगी माखन तेरे,
मैया पुकारे ओ चितचोर-२, कि प्यार से मेरी ओर निहारो,
ग्वालो के संग लेके लखुटिया, धेनु चरावन वन में सिधारो-२ ।।१ ।।

पीतवसन माँ ने पहनाये, काला टीका लगाय रही है,
गोदी बिठाया छोटे कन्हैया को, हाथों से मैया खिलाय रही है,
अपने ललन को ज्ञान की बातें-२, होले से माँ समझाय रही है,
थोड़ा सा खाये है बाकी का माखन, मुखड़े पे माँ लिपटाय रही है-२ ।।२ ।।

काँधे पे धरके काली सी कमली, हाँक चले गऊओं को मुरारी,
खेल किलौल करत ग्वालों की, गूँज उठी वन में किलकारी,
खूब जतन से अधरन धारी-२, वंशी बजाये बांके बिहारी,
''हर्ष'' खुशी से नाचन लागे, आज बिरज में नर और नारी-२ ।। ३ ।।

(तर्ज : ऐसी मस्ती कहाँ मिलेगी...)

सौंप जरा पतवार धणी को तुझको मिले किनारा,
देगा श्याम सहारा,
भगतों की नैया का प्यारे ये ही खेवन हारा,
देगा श्याम सहारा ।। टेर ।।

बीच भंवर में अटकी नैया ये ही पार लगाये,
निर्बल और लाचार का भगतों माझी ये बन जाये,
नंगे पैरों दौड़ा आया जब-जब इसे पुकारा ।। १ ।।

क्या कर लेगा तूफां तेरा, जब ये साथी तेरा,
घोड़े जैसा सरपट दौड़े, तूफानों में बेड़ा,
निज सेवक की आँख में आँसु इसको नहीं गवारा ।। २ ।।

करके समर्पण इसका बन जा छोड़ दे सारी चिंता,
महर नजर जिस पर ये करदे तोड़ दे यम का फंदा,
''हर्ष'' यही है सच्चा साथी, सुनले ओ दुखियारा ।। ३ ।।

(तर्ज : गाड़ी वाले मुझे बिठाले...)

श्याम बगीची के फूलां सुं सज्यो थारो सिणगार रंगीला साँवरिया,
श्याम रंगीला साँवरिया, निरखे थारा टाबरिया ।। टेर ।।

लाल गुलाब की कलियाँ सुं श्याम धणी को हार बण्यों
पहर मोगरे को गजरो सिंहासण पर श्याम जँच्यो,
चम्पा-जुही-रात की राणी की ज्याँमे भरमार ।
रंगीला साँवरिया.... ।। १ ।।

आलुसिंह निज हाथां सुं थारो बाग लगाया जी,
गूंथ-गूथ कर नित गजरा थाने ल्याय पिराया जी,
सिंहासण पर बैठया मुल्को श्याम धणी सरकार ।
रंगीला साँवरिया.... ।। २ ।।

एक पते की बात सुणो सुणकर मनड़ो हर्षावे,
एक तरफ कलियाँ तोड़ो हाथुं-हाथ नई आवे,
श्याम बगीची में फूलां को भर्‍यो रह्वे भण्डार ।
रंगीला साँवरिया... ।। ३ ।।

आलुसिंह को बाबा थे आकर मान बढ़ाया जी,
श्याम बगीची में गुरूवर थारा दरसण पाया जी,
''हर्ष'' बगीची का गुण गावे महिमा अपरम्पार ।
रगीला साँवरिया... ।। ४ ।।

(तर्ज : श्याम धणी को आयो रे बुलावो...)

श्याम धणी की ओल्युँ घणी आवे-२,
म्हाने खाटू धाम थे पुगाइद्यो जी,
सांवरे का दरश कराइद्यो जी ।। टेर ।।

काम करुँ तो म्हारो जी नहीं लागे,
श्याम बसे म्हारे नैणा आगे,
म्हारे नैणा की-२, प्यास बुझाइद्यो जी ।। १ ।।

सोऊँ तो म्हाने नीन्द कोनी आवे,
श्याम धणी की याद सतावे,
खाटू धाम की-२, थे टिकट कटाइद्यो जी ।। २ ।।

जागुं तो ढोला चैन ना आवे,
युँ लागे म्हाने श्याम बुलावे,
म्हारे हिवड़े की-२, आस पुराइद्यो जी ।। ३ ।।

लाख जतन ढ़ोला कर कर हारी,
''हर्ष'' मिटाद्यो आफत म्हारी,
म्हारे मनड़े की-२, पीड़ मिटाइद्यो जी ।। ४ ।।

(तर्ज : लाल दुपट्टा उड़ गया रे....)

श्याम सांवरा पतंग उड़ाये, थाम के डोरी को,
कनखी से वो निरख रहा गूजर की छोरी को,
बड़ा सुन्दर नजारा है, हरी राधा का प्यारा है ।। टेर ।।

बाल सखा और ग्वालों संग, छत पर कान्हा आये है,
राधे तुझे हरायेगें, आज सोच कर आये है,
दीदार करेगी-ये दुनिया, मनवार करेगी ये दुनिया,
आज छकायेगें गिरधर उस नवल किशोरी को ।
कनखी से वो निरख रहा .... ।। १ ।।

सखी सहेली हाथों में, लेकर खड़ी लटाई है,
राधा पेंच लड़ायेगी, घड़ी सुहानी आई है,
इक शोर उठेगा - वो काटा, हर ओर उठेगा - वो काटा,
आज हरायेगें सांवरिया राधा गोरी को ।
कनखी से वो निरख रहा ... ।। २ ।।

देवी-देवता अम्बर से, पुष्प आज बरसाते हैं,
''हर्ष'' नजारा देख सभी, मन ही मन हर्षाते हैं,
जयकार करे सब - जय राधे, जय घोष करे सब - जय कान्हा,
स्वर्ग से सारे निरख रहे इस सुन्दर जोड़ी को ।
कनखी से वो निरख रहा ... ।। ३ ।।

(तर्ज : शुक्रिया शुक्रिया...)

शुक्रिया-शुक्रिया, तूने जो थाम लिया,
दर्द सब दूर हुए, तेरा जो नाम लिया ।। टेर ।।

आवारा बादल सा भटका करता था,
बिन मारे ही तिल-तिल मैं तो मरता था,
अपना कहने वाला भी था ना कोई,
अपने साये से भी मैं तो डरता था ।।
शुक्रिया-शुक्रिया.... ।। १ ।।

मोहमाया ने कसके मुझको पकड़ा था,
झूठे बंधन में मैं अब तक जकड़ा था,
दीन-गरीब ना दिल को मेरे भाते थे,
दौलत के अभिमान में ऐसा अकड़ा था ।।
शुक्रिया-शुक्रिया.... ।। २ ।।

जबसे बाबा शरण तुम्हारी आया हूँ,
जीवन के मुल्यों को जान मैं पाया हूँ,
''हर्ष'' नहीं है दूजा तुमसा श्याम मेरे,
मैं भी जीवन धन्य बनाने आया हूँ ।।
शुक्रिया-शुक्रिया.... ।। ३ ।।

(तर्ज : हमें और जीने की....)

हमें और दूजे का सहारा ना होता, अगर तुम ना होते-२,
कश्ति का कोई किनारा ना होता, अगर तुम ना होते-२ ।।

तेरे सेवकों का तुम्हीं से गुजारा,
मुसीबत में बाबा तुम्हीं को पुकारा,
मुश्किलों में कोई हमारा ना होता ।। अगर .... ।। १ ।।

अगर आँख रोई आँसू भी पोंछे,
रहे साथ मेरा साथी तु बनके,
मेरा गिर के उठना, दुबारा ना होता ।। अगर .... ।। २ ।।

तेरे नाम से अब मेरा काम होता,
करता है तु बस मेरा नाम होता,
किस्मत का रोशन, सितारा ना होता ।। अगर ... ।। ३ ।।

तुम्हें पा के बाबा लगता है ऐसे,
मिला एक दरिया सागर में जैसे,
किसी ने भी ''हर्ष'' को, उबारा ना होता ।। अगर .... ।। ४ ।।

(तर्ज : पल पल दिल के पास....)

हर पल दिल में श्याम, तु रहता है,
केवल तेरा ध्यान, ही रहता है ।। टेर ।।

हर वक्त आँखो में, तेरा जलवा रहता है,
तेरी सेवा को आतुर, मेरा मनवा रहता है,
मैं आँख मीचूँ तो, तेरा दर्शन पाता हूँ,
तेरी प्यारी चितवन में, कान्हा खो जाता हूँ,
इस तन-मन की सारी, सुध भूल जाता हूँ ।। १ ।।
तुझे देखा करता हूँ, ख्वाबो में सपनों में,
तेरी किरपा है बाबा, मुझे समझा अपनों में,
ये कैसा नाता है, ये कैसा बंधन है,
सागर से बून्द मिले, ये कैसा संगम है,
जिस हाल में रहता हूँ, तेरे गीत गाता हूँ ।। २ ।।
ना जाने क्युँ इतना, मैं तुझको याद करूँ,
ओ सांवलिये बतलादे, तुझसे फरियाद करूँ,
बाबा तु अन्तर्यामी, कण-कण की जानता है,
किस दिल में क्या बसा है, हर दिल की जानता है,
कहे ''हर्ष'' हमेशा सिर पे, तेरा हाथ चाहता हूँ ।। ३ ।।

(तर्ज : चाँदी जैसा रंग....)

हरपल हमको श्याम मिला है तेरी दया का दान,
खूब तेरा ऐहसान है बाबा, खूब तेरा ऐहसान ।। टेर ।।

हमको ना अब कोई चिंता, जब है तेरा साथ-२,
हम दीनों का एक सहारा, तू ही दीनानाथ,
यू ही हमेशा, थामें रखना, हम भगतों का हाथ,
खाटूवाले श्याम तुम्ही से-२, भगतों की पहचान ।। १ ।।

जब से तेरी राहें पकड़ी, भूले रस्ते सारे-२,
तेरी दया से अब तो बाबा, हो गये वारे न्यारे,
जब भी संकट आन सताये, तेरा नाम पुकारें,
हर मुश्किल का तूने बाबा-२, पल में किया निदान ।। २ ।।

हम बेरंगो पर हे दाता, रंग चढ़ा है तेरा-२,
मन के इस मंदिर में होवे, हर पल श्याम बसेरा,
तेरी चमक से दूर हमेशा होता रहे अंधेरा,
''हर्ष'' भगत का सेठ साँवरे-२, कहना इतना मान ।। ३ ।।

(तर्ज : हम तो चले परदेश...)

हाल हुआ बेहाल कान्हा आधी रात को,
आके हमे सम्भाल कान्हा आधी रात को,
होऽऽऽ कान्हा होऽऽऽ ।। टेर ।।

ओ कान्हा तेरी ज्योत जलाकर ''तुझको बुलाये''-२,
कब आओगे श्याम सलोने सौ सौ सगुन मनाये,
जीना हुआ मुहाल-२, कान्हा आधी रात को ।।१ ।।

क्युँ बाबा मेरे घर आने में ''देर लगाई''-२,
जल्दी आजा श्याम सजन अब हमको नहीं समाई,
करदे हमें निहाल-२, कान्हा आधी रात को ।। २ ।।

''हर्ष'' भगत की आस मुरारी ''तोड़ न देना''-२,
बीच भंवर में श्याम बिहारी हमको छोड़ न देना,
आजाओ तत्काल-२, कान्हा आधी रात को ।। ३ ।।

(तर्ज : फूलों का तारों का...)

हारे का साथी है, सबका कहना है,
देव दयालु ये मेरा कान्हा है,
सारी उमर इसके गीत गाना है ।। टेर ।।

दीनों का है साथी ये दुखियों का नाथ,
हारे हुए प्राणी का देता है ये साथ,
बाबा की सेवा में, हमको रहना है ।। १ ।।

लीले घोड़े वाले का दुनिया में है नाम,
जिसका ना हो कोई है उसका बाबा श्याम,
चरणों की छैया में हमको रहना है ।। २ ।।

भावों का है भूखा ये मेरा लखदातार,
भावों से तू इसको रिझाले एक बार,
''हर्ष'' कन्हैया का बनके रहना है ।। ३ ।।

ॐ जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे ।
खाटू धाम विराजत, अनुपम रूप धरे ।। ॐ जय।।

रतन जड़ित सिंहासन, सिर पर चंवर ढुरे ।
तन केशरिया बागो, कुण्डल श्रवण पड़े ।। ॐ जय ।।

गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे ।
खेवत धूप अग्नि पर, दीपक ज्योति जले ।। ॐ जय ।।

मोदक खीर चूरमा, सुवरण थाल भरे ।
सेवक भोग लगावत, सेवा नित्य करे ।। ॐ जय ।।

झांझ कटोरा और घड़ियावल, शंख मृदंग धुरै ।
भक्त आरती गावे, जय-जय कार करे ।। ॐ जय ।।

जो ध्यावे फल पावे, सब दुख से उबरे ।
सेवक जन निज मुख से, श्री श्याम-श्याम उचरे ।।ॐजय ।।

श्री श्याम बिहारी जी की आरती, जो कोई नर गावे ।
कहत 'आलूसिंह' स्वामी, मनवाछिंत फल पावे ।। ॐ जय ।।

जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे ।
निज भक्तों के तुमने, पूरण काम करे ।। ॐ जय ।।

आरती कीजै हनुमान लला की, दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ।।

जाके बल से गिरिवर कांपे, रोग दोष जाके निकट न झांके ।

अञ्जनी पुत्र महा बलदाई, सन्तन के प्रभु सदा सहाई ।

दे बीरा रघुनाथ पठाये, लंका जारि सिया सुधि लाये ।

लंका सो कोट समुद्र सी खाई, जात पवनसुत बार न लाई ।

लंका जारि असुर संहारे, सियारामजी के काज सँवारे ।

लक्ष्मण मूर्छित पड़े धरनी पर, आन संजीवन प्राण उबारे ।

पैठी पाताल तोरी यम कारे, अहिरावण की भुजा उखारे ।

बाएँ भुजा असुर दल मारे, दाहिने भुजा संत जन तारे ।

सुरनर मुनि जन आरती उतारे, जै जै जै हनुमानजी उचारे ।

कञ्चन थार कपूर लौ छाई, आरती करत अञ्जना माई ।

जो हनुमानजी की आरती गावे, बसि बैकुण्ठ अमर पद पावे ।

लंक विध्वंस किये रघुराई, तुलसी दास स्वामी कीरति गाई ।।